शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 47 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 47 अंक – 22 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2023 सोमवार 23 – 30 मई 2022 मूल्य पांच रूपए

क्या प्रधानमंत्री या दूसरे केन्द्रीय नेताओं की यात्राओं से प्रदेश का चुनावी परिदृश्य बदल जायेगा

शिमला/शैल। क्या प्रधानमंत्री की शिमला यात्रा से ही भाजपा की चुनावी वैतरणी पार हो जायेगी? यह सवाल आज प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में एक बड़ा सवाल बनकर चर्चा का केंद्र बना हुआ है। क्योंकि यह एक कड़वा सच है कि प्रदेश के चारों उपचुनाव हारने के बाद जो फजीहत जयराम सरकार की हुई है उससे वह उभर नहीं पायी है। पांच राज्यों में हुये विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली हार से भाजपा का जो मनोबल थोडा संभाला था उसे प्रदेश में घटे पुलिस भर्ती परीक्षा के पेपर लीक और जांच प्रकरण ने फिर रसातल में पहुंचा दिया है। इसी प्रकरण के बाद चम्बा में विधानसभा उपाध्यक्ष द्वारा स्कूल के छात्र को थप्पड़ मारने का मामला घट गया। देहरा के निर्दलीय विधायक होशियार सिंह ने जिस भाषा में जनता के बीच ग्रामीण विकास मंत्री वीरेंद्र कंवर और पूरी सरकार को कोसा है उससे हुये नुकसान की भरपाई मुख्यमंत्री द्वारा विधायक का अभिवादन स्वीकार न करने से नहीं हो जाती है। क्योंकि यही विधायक कल तक मुख्यमंत्री और सरकार के कितने निकट और विश्वस्त रहे हैं। यह देहरा में आईपीएच मंत्री के एक प्रोग्राम में सामने आ चुका है। भाजपा में आंतरिक गुटबाजी कितनी ज्यादा रही है इसका खुलासा कांगड़ा में रमेश ध्वाला बनाम पवन राणा और फिर सरवीन चौधरी विवादों तथा ईन्दू गोस्वामी के पत्रों से सामने आ ही चुका है। 2017 के चुनावों में धूमल के खिलाफ षडयंत्र रचा गया था। यह अब धूमल द्वारा जांच की मांग करने और उसे नड्डा द्वारा इंकार कर दिये जाने से भी स्पष्ट हो चुका है। नेतृत्व परिवर्तन की चर्चाएं कोर कमेटी की विस्तारित बैठक से शुरू हुई थी। इस बैठक के बाद यह बराबर कहा गया कि कुछ मंत्रियों को हटाया जा सकता है और कुछ के विभागों में फेरबदल हो सकता है। इन्हीं चर्चाओं में बिंदल से प्रदेश अध्यक्षता और स्पीकर शीप छीन गयी। परमार से स्वास्थ्य मंत्री का पद ले लिया गया। कई विधायकों और मंत्रियों के टिकट काटे जाने की खबरें आये दिन उछलती रहती हैं। कैसे और कितने लोग पत्र बम्बों के शिकार हुये हैं। यदि पार्टी में घटे इस सब को एक साथ जोड़ कर देखा और समझा जाये तो कोई भी विश्लेषक यह मानेगा की पार्टी में सब कुछ ठीक नहीं है। आम आदमी पार्टी की आमद ने भी भाजपा और जयराम सरकार की चिंताएं बढ़ा दी हैं। इसीलिए नड्डा और अनुराग को मैदान में उतारा गया। अनुराग ने आप की प्रदेश इकाई के शीर्ष नेतृत्व को ही तोड़कर भाजपा में शामिल करवा दिया। नड्डा ने रैलियां की। युवा मोर्चा का राष्ट्रीय कार्यक्रम धर्मशाला में आयोजित किया गया। यह क्यास लगाये जा रहे थे कि कांगड़ा से कांग्रेस के कुछ नेता भाजपा में शामिल हो जाएंगे। कई नाम चर्चा में आये लेकिन अंतिम परिणाम शून्य रहा। फिर त्रिदेव सम्मेलन में स्मृति ईरानी को बुलाया गया यहां पर भाजपा के इन त्रिदेवों को ब्रह्मा, विष्णु और महेश की संज्ञा दे दी गई। लेकिन इस प्रयास के परिणाम भी शून्य रहे। क्योंकि लोग महंगाई और बेरोजगारी से इस कदर तंग आ चुके हैं कि भाजपा के किसी भी प्रयास का कोई परिणाम नहीं निकल रहा है। आप की तर्ज पर जयराम भी मुफ्त बिजली और पानी देने की घोषणाएं कर चुके हैं। इन घोषणाओं को पूरा करने के लिए कर्ज़ का सहारा लिया जा रहा है। लेकिन इस सबके बावजूद लोग यह नहीं भूल पा रहे हैं कि प्रदेश बेरोजगारी में देश के टॉप छः राज्यों में से एक हो गया है। जयराम सरकार और भाजपा इसी सब के चलते आज नगर निगम शिमला के चुनाव करवाने का साहस नहीं कर पा रही है। ऐसा पहली बार हुआ है की सरकार के पक्ष में कुछ भी सकारात्मक न हो। इसी परिदृश्य में प्रधानमंत्री अपनी सरकार के आठ साल पूरा होने पर गरीब कल्याण योजनाओं के नाम से शिमला आ रहे हैं। जयराम सरकार ने भी यह बड़े गर्व से दावा किया है कि इस अवसर के लिए शिमला का चुनाव स्वयं प्रधानमंत्री ने किया है। प्रधानमंत्री इस अवसर पर प्रदेश को क्या देकर जाते हैं इसका पता तो बाद में ही चलेगा। लेकिन इस अवसर पर यह सवाल आवश्यक उछलेंगे कि मोदी सरकार का पहला बड़ा आर्थिक फैसला नोटबंदी का था जिसमें 99.6% पुराने नोट नये नोटों से बदले गये हैं। 0.4% इसलिये रहे कि नेपाल में नोटबंदी प्रभावी नहीं हुई। नोटबंदी से जाली नोटों के छपने पर लगाम लगेगी यह दावा किया गया था। लेकिन अब रिजर्व बैंक द्वारा जारी रिपोर्ट में माना गया है कि अब भी जाली नोट छप रहे हैं। इसके आंकड़े तक जारी किये गये हैं। 2014 में आम जमा पर जो ब्याज मिलता था वह आज 2022 में आधे से भी कम रह गया है। जीरो बैलेंस के नाम पर खोले गये खातों पर न्यूनतम बैलेंस की शर्त क्यों लगायी गई? क्या इससे गरीब आदमी प्रभावित नहीं हुआ है? हिमाचल सरकार के अपने आंकड़ों के अनुसार 65% लोग मुफ्त मिले गैस सिलेंडर दूसरी बार नहीं भरवा

शेष पृष्ठ 8 पर.....

कुल्लू के थप्पड़ कांड के बावजूद फोरलेन मुआवजे का मुद्दा अभी तक लंबित क्यों

शिमला/शैल। इस समय हिमाचल के आठ जिलों में फोरलेन का काम चला हुआ है। इस काम में इन जिलों के लोगों की जमीने और मकान आदि फोरलेन में आ रहे हैं। सरकार इनका अधिग्रहण करके प्रभावित लोगों को मुआवजा भी दे रही है। लेकिन यह मुआवजा सर्किल रेट का सिर्फ दो गुना दिया जा रहा है। जबकि यह चार गुणा दिया जाना चाहिये। कांग्रेस शासन के दौरान जब भाजपा विपक्ष में थी तब सदन में इसको लेकर बहुत हंगामा हुआ था। विधानसभा की कारवाई प्रभावित हुई थी। कुल्लू-मनाली- बिलासपुर फोरलेन पर तो इसके प्रभावितों ने वाकायदा इसके लिये संघर्ष कमेटी का गठन कर लिया था। ब्रिगेडियर खुशाल सिंह ठाकुर इसमें अग्रणी भूमिका में थे। शिमला के प्रैस क्लब में एक पत्रकार वार्ता में सरकार को कड़ी चेतावनी दी गयी थी। जब ब्रिगेडियर खुशाल सिंह मंडी लोकसभा उपचुनाव में भाजपा के प्रत्याशी बने तब इसी मुद्दे पर उनकी अस्पष्टता चुनाव में भारी पड़ी। इसी फोरलेन प्रकरण पर कुल्लू में नितिन गडकरी के आगमन पर पुलसियों में थप्पड़ कांड तक घट चुका है।

लेकिन इस थप्पड़ कांड के बाद भी आज तक यह मुद्दा अपनी जगह खड़ा है। अब एक संस्था निष्ठा ने इस पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। इस संस्था का एक प्रतिनिधिमंडल ई संजीव सुन्टा की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री से भी मिला है। मुख्यमंत्री को पत्र सौंपकर फोरलेन प्रभावितों को चार गुना मुआवजा देने की मांग की गयी है। अब जब सरकार के आठ वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री शिमला आ रहे हैं तब यह मांग उनके ध्यान में लाने के प्रयास किये जा रहे हैं। चुनावी वर्ष में यह मांग बहुत प्रभावी भूमिका निभायेगी क्योंकि प्रदेश के आठ जिले इससे प्रभावित हैं।

राज्यपाल ने नेशनल फॉनल रेपोजिट्री ऑफ हिमालय व म्यूजियम का लोकार्पण किया

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सोलन में नेशनल फॉनल रेपोजिट्री ऑफ हिमालय व म्यूजियम राष्ट्र को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि हमारी समृद्ध परम्परा और विरासत को सबके समक्ष लाने के लिए सभी को गम्भीरता से प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण (जेडएसआई) हाई एल्टीटयूड रिजनल सेन्टर सोलन द्वारा इस दिशा में किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हिमालयी क्षेत्रों में लुप्त हो रही जीवों की प्रजातियों के लिखित प्रमाणीकरण के लिए उनके द्वारा किया गया कठिन परिश्रम वास्तव में सराहनीय है।

इस अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि वर्तमान में इस प्रकार के अनुसंधान करने तथा विरासत संस्थानों की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि ज्यूलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया पिछले कई वर्षो से उत्कृष्ठ कार्य कर रहा है और संस्थान द्वारा कई महत्त्वपूर्ण खोजें की गई हैं परन्तु इस दिशा में और आगे बढ़ने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमारी विरासत बहुत समृद्ध है और इसमें लिखित दस्तावेज तैयार करना बहुत चुनौतीपूर्ण है। वर्तमान में इस दिशा में बेहतरीन काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस खजाने को जनता तक पहुंचाने तथा भविष्य के लिए इसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि ज्यूलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया का कार्य केवल जीवों के संरक्षण और उन्हें प्रदर्शित करने तक ही सीमित नहीं है। इसका मुख्य कार्य हिमाचल की जनता और यहां आने वाले आगन्तुकों को प्रदेश की समृद्ध जीव सम्पदा के बारे में शिक्षित करना है। यह संग्रहालय हमारी समृद्ध जीव सम्पदा, स्वच्छ पर्यावरण और हमारे अनुभवों को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रदर्शित करता है।

राज्यपाल ने कहा कि यह संग्रहालय हमारी भारतीय सांस्कृतिक पहचान का एक अनूठा उदाहरण है। यह संग्रहालय हमारा वर्तमान है जो यह दर्शाता है कि हम किस प्रकार अपनी समृद्ध जैव विविधता का संरक्षण करते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश और देश के अन्य नागरिकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि लोगों को शिक्षित करने, सीखने और जागरूक करने के लिए जेडएसआई यहां स्थापित किया गया है। हिमाचल पश्चिमी हिमालय के केंद्र में स्थित है जिसे जैव विविधता के प्रमुख केंद्र के रूप में पहचाना जाता है और यहां समृद्ध जैव विविधता है। उन्होंने कहा कि हिमालय के वन्य जीव मूल्यवान हैं और उनका जीवन अनमोल है। उन्होंने कहा कि हमें आने वाली पीढ़ियों का बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के लिए वन्यजीवों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की निदेशक डॉ. धृति बनर्जी ने राज्यपाल का स्वागत कर उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया का हिमालयन फॉनल रिपोजिटरी व म्यूजियम हमारे जीव-जंतुओं के रूप में संपदा की कहानी बताएगा। यह आगंतुकों को हिमाचल प्रदेश की प्रकृति, जैव विविधता और इस संबंध में और अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने कहा कि भारत ने क्या किया है, और वह क्या करने की इच्छा रखता है, यह संस्थान इसे प्रतिबिम्बित करेगा। उन्होंने कहा कि यह संस्थान आम जनमानस और अन्य वैज्ञानिकों के साथ जीव- जंतुओं की इस संपदा की जानकारी साझा करके, संग्रहालयों और भंडारों के माध्यम से हमारा स्वयं से व एक दूसरे के साथ संवाद भी स्थापित करेगा, ताकि भविष्य को आकार देने में हम एक प्रबुद्ध आवाज बन सकें।

जेडएसआई के पूर्व निदेशक डॉ. के.वेंकटरमण ने भी जियोलॉजिकल सर्वेक्षण और संग्रहालय के ऐतिहासिक पहलुओं के बारे में जानकारी प्रदान की।

जेडएसआई सोलन के कार्यालय प्रभारी डॉ. ए.के. सिद्धू, ने भी जेडएसआई सोलन के क्षेत्रीय केंद्र की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी।

जेडएसआई सोलन के वैज्ञानिक-डी डॉ. बोनी अमीन लस्कर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

उपायुक्त कृतिका कुल्हरी, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र शर्मा, शूलिनी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, डॉ. पी. के. खोसला, मशरूम अनुसंधान केंद्र, सोलन के निदेशक डॉ. वी.पी. शर्मा, और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

राज्यपाल से भारत में ब्रिटिश उप उच्चायुक्त सुश्री कैरोलिन रोवेट ने भेंट की

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर से भारत में ब्रिटिश उप उच्चायुक्त कैरोलिन रोवेट ने

राजभवन में भेंट की।

इस शिष्टाचार भेंट के दौरान उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग को लेकर चर्चा की।

राज्यपाल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में जैव विविधता का अपार भंडार है। उन्होंने कहा कि हिमाचल में अनेक ऐसे स्थल हैं, जिन्हें पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हिमाचल और ब्रिटेन दोनों ही विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में समन्वय से कार्य कर विचारों और ज्ञान का आदान-प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल की ग्रामीण संस्कृति सही मायने में हमारा खजाना है, जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने उन्हें राज्य में प्रचलित प्राकृतिक खेती से भी अवगत करवाया।

राज्यपाल ने उप उच्चायुक्त को हिमाचली टोपी व शॉल भेंट कर सम्मानित भी किया।

राज्यपाल ने माउंट एवरेस्ट विजेता को बधाई दी

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराने वाली बलजीत कौर को इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए बधाई दी। वह सोलन जिला के ममलीग क्षेत्र की निवासी हैं।

राज्यपाल ने कहा कि बलजीत कौर ने माउंड एवरेस्ट को सफलतापूर्वक फतह कर न केवल प्रदेश बल्कि समस्त राष्ट्र का मस्तक गर्व से ऊँचा किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेशवासियों को उन पर गर्व है तथा वह दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

राज्यपाल ने सोलन में स्कूल के विद्यार्थियों से संवाद किया

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सोलन में राजकीय दलीप वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला (बाल) के विद्यार्थियों के साथ उनकी कक्षा में संवाद किया।

राज्यपाल ने पाठशाला के नौवीं-ए कक्षा के विद्यार्थियों के साथ बातचीत की। 53 छात्रों की इस कक्षा में विद्यार्थियों ने उत्सुकता के साथ सवाल पूछे।

राज्यपाल ने कहा कि किताबें मनुष्य की सच्ची मित्र होती हैं और हमें किताबों की संगति करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पाठयपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों को पढ़ने की आदत बनाना बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमें बचपन से ही किताबें पढ़ने को अपनी नियमित दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। इससे न केवल ज्ञान में वृद्धि होती है बल्कि विषय विशेष का ज्ञान भी बढ़ता है। उन्होंने कहा कि विषय को समझने के लिए अलग-अलग किताबें पढ़ना आवश्यक है। हमारी प्राचीन पुस्तकों में ज्ञान का भण्डार है। देश में कई महान हिन्दी उपन्यासकार, कहानीकार और कवि हैं जिनकी रचनाओं का अध्ययन करने से हमारा जीवन समृद्ध होता है। हमें इन लोगों के जीवन मूल्यों का अनुसरण करना चाहिए।

राज्यपाल ने छात्रों से पूछा कि ज्ञान और विज्ञान में क्या अंतर है। हम अखबार क्यों पढ़ते हैं? अखबार पढ़ना जरूरी क्यों है? उन्होंने यह भी पूछा कि किस-किस विद्यार्थी के घर में भारत की महान हस्तियों की पुस्तकें हैं। राज्यपाल ने अपने साथ लाई गई महापुरुषों की पुस्तकें प्रत्येक छात्र को भेंट की और उन्हें पढ़ने के लिए कहा तथा इसके के उपरांत अपने अनुभव पत्र के माध्यम से राजभवन को भेजने

के लिए कहा। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में पढ़ने की आदत बनाने का परामर्श दिया। इस अवसर पर छात्रों ने राज्यपाल से प्रश्न भी किए।

विज्ञान अध्यापिका निशा ठाकुर व सीमा शर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थी।

इसके उपरान्त, राज्यपाल ने स्कूल अध्यापकों के साथ बैठक कर शिक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। छात्रों के साथ संवाद करते हुए राज्यपाल ने बच्चों को 'पढ़ेंगे तो टिकेंगे' के उद्देश्य से पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अध्यापकों से कहा कि छात्रों को पढ़ने की आदत डालने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि छात्रों को दिशा की जरूरत है और कहा कि वे बुद्धिमान हैं लेकिन उनके सामने एक उदाहरण बनना हमारा कर्तव्य है ताकि उनमें नैतिक मूल्य भी पैदा हों।

आज का दिन इन छात्रों के जीवन का यादगार दिन के रूप में अंकित हो गया। उनके लिए प्रदेश के गणमान्य व्यक्तियों के साथ बातचीत करने का यह अनुभव अविस्मरणीय रहेगा।

स्कूल की प्रधानाचार्य दिशा शर्मा ने राज्यपाल का स्वागत किया।

उपायुक्त सोलन कृतिका कुल्हरी, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र शर्मा और अन्य प्रशासनिक अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

शैल समाचार
संपादक मण्डल

संपादक- बलदेव शर्मा

सयुक्त संपादक:जे.पी.भारद्वाज

विधि सलाहकार: ऋचा

अन्य सहयोगी

राजेश ठाकुर

अंजना

रेडक्रॉस में सभी सदस्यों की सहभागिता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण: डॉ. साधना ठाकुर

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश राज्य रेडक्रॉस अस्पताल कल्याण अनुभाग की अध्यक्षा एवं राष्ट्रीय रेडक्रॉस प्रबन्धन समिति की सदस्य डॉ. साधना ठाकुर नेराज्य रेडक्रॉस अस्पताल कल्याण अनुभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि राज्य रेडक्र स सोसायटी समाज के प्रत्येक वर्ग की नि:स्वार्थ सेवा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

उन्होंने कहा कि रेडक्र स एक समाजसेवी संस्था है, जिसमें प्रत्येक सदस्य की सहभागिता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष वार्षिक रेडक्रॉस मेला सितम्बर माह में आयोजित किया जाएगा। मेले में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा फैंसी ड्रैस, डॉग शो, तम्बोला, स्किल गेम्स आदि अनेक मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हारमोनी ऑफ पाइनज पुलिस बैंड रेडक्रॉस मेले का मुख्य आकर्षण रहेगा।

उन्होंने कहा कि रेडक्रॉस की गतिविधियों में युवाओं और आम लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि विद्यालयों और महाविद्यालयों में रेडक्रॉस समितियां गठित की जाएगी। बच्चों के लिए पोस्टर मेकिंग, निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि रेडक्रॉस मेले से एक सप्ताह पूर्व रन फॉर रेडक्रॉस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा, जिसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी वर्गों में रेडक्रॉस की गतिविधियों के प्रति जागरूकता पैदा करना होगा।

उन्होंने बताया कि मेले में पर्यटन विभाग द्वारा पारंपरिक हिमाचली व्यंजनों तथा महिला संगठनों व सरकारी विभागों द्वारा विभिन्न व्यंजनों के स्टॉल लगाए जाएंगे। उन्होंने हिमाचल प्रदेश रेडक्रॉस अस्पताल कल्याण शाखा को उदारता से दान देने का आग्रह किया।

बैठक की कार्यवाही का संचालन अस्पताल कल्याण शाखा की अवैतनिक सचिव डॉ.किमी सूद ने किया।

बैठक में राज्य रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव संजीव कुमार, उपाध्यक्ष मधू सूद और विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी और हिमाचल प्रदेश राज्य रेडक्रॉस अस्पताल शाखा के सदस्य उपस्थित थे।

मंत्रिमंडल की बैठक में मुख्यमंत्री बाल सुपोषण योजना को मंजूरी प्रदान की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में आयोजित राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में मुख्यमंत्री बाल सुपोषण योजना को मंजूरी प्रदान की गई। यह योजना केंद्र और राज्य सरकार तथा महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के संयुक्त प्रयासों से चलाई जाएगी। इस योजना के माध्यम से विभिन्न हितधारकों का अभिसरण कर गहन हस्तक्षेपों द्वारा माताओं और बच्चों के पोषण स्तर में महत्त्वपूर्ण सुधार की परिकल्पना की गई है। राज्य सरकार ने सप्त स्तम्भ दृष्टिकोण के माध्यम से इस प्रयास को साकार करने के लिए नीति आयोग के साथ व्यापक परामर्श किया है। इसके घटकों में दस्त का शीघ्र पता लगाना और इसका उपचार, पहचान किए गए उच्च जोखिम समूहों की सघन निगरानी और देखभाल, विशेष एसएनपी-उच्च जोखिम वाले बच्चों के लिए प्रोटीन युक्त भोजन और बेहतर भोजन पद्धतियां अपनाना, बच्चों और किशोरियों में एनीमिया के लिए विभिन्न हस्तक्षेप, उच्च जोखिम वाले गर्भधारण विशेष रूप से उच्च रक्तचाप और एनीमिया, कुपोषित बच्चों का उपचार और अनुवर्ती कार्यवाही तथा सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के लिए रणनीतियां शामिल हैं। इस योजना का बजट 65 करोड़ रुपये है। यह दस्त, निमोनिया और एनीमिया जैसी बीमारियों का मुकाबला कर बचपन में कुपोषण की समस्या से निपटने के लिए मील पत्थर साबित होगी।

यह जन आन्दोलन के रूप में केंद्रित दृष्टिकोण के साथ, इसमें हितधारक बच्चों, किशोरों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान करवाने वाली माताओं के स्वास्थ्य के लिए योजना बनाने, कार्यान्वित करने और निगरानी के लिए शामिल किया जाएगा। इस योजना से हिमाचल प्रदेश एनएफएचएस -5 मानकों में समयबद्ध तरीके से सुधार करने में सक्षम होगा।

मंत्रिमंडल ने हिमाचल पथ परिवहन निगम की राज्य के भीतर चलने वाली (इंट्रा स्टेट) साधारण बसों में महिला यात्रियों को किराये में 50 प्रतिशत रियायत देने का निर्णय लिया। इस संबंध में मुख्यमंत्री ने चम्बा में 15 अप्रैल, 2022 को हिमाचल दिवस के अवसर पर घोषणा की थी।

मंत्रिमंडल ने 360 नई बसें/अन्य परिवहन वाहन खरीदने के लिए 160 करोड़ रुपये का सावधि ऋण लेने के लिए हिमाचल पथ परिवहन निगम के पक्ष में सरकारी गारंटी प्रदान करने का अनुमोदन किया। इससे यात्रियों को बेहतर परिवहन सुविधाएं प्रदान की जा सकेंगी।

मंत्रिमंडल ने प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को 1 मई, 2022 से निःशुल्क घरेलू जलापूर्ति सुविधा उपलब्ध करवाने का निर्णय भी लिया।

मंत्रिमंडल ने मुख्यमंत्री गृहिणी सुविधा योजना के लाभार्थियों को गैस कनैक्शन देने के समय दिए जाने वाले रिफिल के अतिरिक्त दो निःशुल्क गैस सिलैण्डर उपलब्ध करवाने को अनुमति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने राज्य सरकार की नियमित महिला कर्मचारियों को 12 सप्ताह तक दतक ग्रहण अवकाश प्रदान करने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने राजस्व विभाग के पटवार वृत्तों में कार्यरत अंशकालीक कर्मचारियों को वर्तमान में दिए जाने वाले मानदेय को 4100 रुपये से बढ़ाकर 5000 रुपये प्रतिमाह करने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमंडल ने राजस्व विभाग में लम्बरदारों के मानदेय को मौजूदा 2300 रुपये से बढ़ाकर 3200 रुपये प्रतिमाह करने का निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने एक अप्रैल, 2022 से मिड-डे-मील योजना के अन्तर्गत कार्यरत कुक एवं सहायिकाओं के मानदेय में 900 रुपये प्रतिमाह वृद्धि करने का निर्णय लिया। इस निर्णय से प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में कार्यरत 20,650 से अधिक कुक एवं सहायिकाएं लाभान्वित होंगी।

बैठक में शिक्षा विभाग में कार्यरत अशंकालिक जलवाहकों के मानदेय में एक अप्रैल, 2022 से प्रतिमाह 900 रुपये की वृद्धि का निर्णय लिया गया। इससे 581 जलवाहक लाभान्वित होंगे।

मंत्रिमण्डल ने एसएमसी के अन्तर्गत नियुक्त सभी श्रेणियों के अध्यापकों के मानदेय में एक अप्रैल, 2022 से प्रतिमाह 1000 रुपये की वृद्धि का निर्णय लिया गया, जिससे प्रदेश के 2477 एसएमसी अध्यापक लाभान्वित होंगे।

बैठक में शिक्षा विभाग के सुचारू संचालन के लिए अधीक्षक, ग्रेड-1 के 66 पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में मरीजों की सुविधा के लिए ऑप्रेशन थियेटर सहायकों के 177 पदों को भरने को मंजूरी प्रदान की।

बैठक में पशु पालन विभाग में अनुबन्ध आधार पर सीधी भर्ती/बैचवाइज भर्ती के माध्यम से वैटनरी अधिकारियों के 100 पदों को भरने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमण्डल ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत अनुबन्ध/आउटर्सोस आधार पर विभिन्न श्रेणियों के 130 पद भरने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में अटल स्कूल वर्दी योजना के अन्तर्गत सरकारी स्कूलों में प्री-प्राईमरी (नर्सरी) के बच्चों को स्कूल वर्दी के दो सैट प्रदान करने को मंजूरी प्रदान की गई। इसके लिए प्रतिवर्ष 200 रुपये सिलाई की राशि भी दी जाएगी।

मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति निगम लिमिटेड की मौजूदा वन टाईम सेटलमेंट योजना को एक वर्ष की अवधि का विस्तार देने को स्वीकृति प्रदान की तथा 2.83 करोड़ रुपये के मार्जन मनी लोन और ब्याज को माफ करने का निर्णय लिया। इससे 11133 लाभार्थियों को लाभ पहुंचेगा।

बैठक में शिमला जिले के नारी सेवा केन्द्र मशोबरा में सफाई कर्मचारी के एक पद के अलावा अनुबन्ध आधार पर चिकित्सा अधिकारी (मनोचिकित्सक) का एक पद सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश बाल कल्याण परिषद द्वारा संचालित हिमाचल प्रदेश बाल/बालिका आश्रमों, राज्य/जिला बाल संरक्षण इकाईयों तथा राज्य दत्तक संसाधन एंजेंसी/बाल संरक्षण सेवा कार्यक्रमों में कार्यरत कर्मचारियों के वेतन/मानदेय में उल्लेखनीय वृद्धि करने को स्वीकृति प्रदान की। इससे इन संस्थानों में कार्यरत 247 कर्मचारी लाभान्वित होगें।

बैठक में मण्डी जिले में उप-तहसील डैहर के अन्तर्गत पटवार वृत भटवारा से अलग कर नया पटवार वृत ध्वाल बनाने को मंजूरी प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने ऊना जिले की ऊना तहसील में पटवार वृत बातूही और पनोह का पुनर्गठन कर नया पटवार वृत तयोदी बनाने को भी स्वीकृति प्रदान की।?

बैठक में मण्डी जिला की चच्योट तहसील में पटवार वृत सरोआ को विभाजित कर नया पटवार वृत तांदी बनाने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने ऊना जिले में बोहाना, दिहार और धनेट से अलग कर नया पटवार वृत क्यारियां बनाने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने कांगड़ा जिले की तहसील नगरोटा बगवां में मौजा पथियार में हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम कार्यशाला निर्माण के लिए 99 वर्ष की अवधि के लिए हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम को 0-01-16 हेक्टेयर भूमि लीज आधार पर देने को अपनी स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने राज्य/जिला उपभोक्ता आयोग के मीडियेशन सैल में विभिन्न श्रेणियों के 14 पदों के सृजन एवं भरने को अपनी स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने जिला चम्बा के डलहौजी विधानसभा क्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला टिक्करू तथा मलाल में विज्ञान कक्षाएं आरम्भ करने और विभिन्न श्रेणियों के 6 पद सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने जिला मण्डी के सराज विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम पंचायत खावलेच के बेकर में नई राजकीय प्राथमिक पाठशाला खोलने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में जिला बिलासपुर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कुह मंजवार में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए वाणिज्य कक्षाएं आरम्भ करने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमण्डल ने जिला कांगड़ा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सरिमोलग में विज्ञान कक्षाएं और जिला मण्डी के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला जहल में नॉन-मेडिकल की कक्षाएं आरम्भ करने तथा चार पदों को सृजित करने को भी मंजूरी प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने जिला शिमला के चौपाल विधानसभा क्षेत्र के कुपवी में राजकीय डिग्री महाविद्यालय खोलने के साथ विभिन्न श्रेणियों के 18 पद सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की। इसके अतिरिक्त निर्माण कार्य के लिए 5 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया।

शिक्षा विभाग में कार्यरत भाषा अध्यापकों को टीजीटी (हिन्दी) के रूप में मनोनित करने को भी सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने क्षेत्रीय अस्पताल बिलासपुर में मरीजों की सुविधा के लिए मौजूदा बिस्तर क्षमता को बढ़ाकर 270 से 300 बिस्तर करने का भी निर्णय लिया।

मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अधोसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम) के केंद्र प्रायोजित योजनाओं के घटकों को लागू करने के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने को अपनी मंजूरी दी। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को विकसित करने में मदद मिलेगी। राज्य में जमीनी स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आवश्यक सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यो और सेवा वितरण को एकीकृत करके भविष्य में महामारी से संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करना है।

कुल्लू जिले में बंशा पशु औषधालय को किसानों की सुविधा के लिए पशु चिकित्सालय में स्तरोन्नत करने व तीन पदों को सृजित कर भरने को मंजूरी प्रदान की। इससे 8 पंचायतों के लोगों को लाभ होगा।

मंत्रिमंडल ने मुख्यमंत्री आरोग्य पशुधन योजना के अन्तर्गत खोले गए 286 पशु औषधालयों को नियमित पशु औषधालयों में परिवर्तित करने के अतिरिक्त ग्राम पंचायत पशु चिकित्सा सहायकों के 286 पदों को अनुबंध के आधार पर पशु चिकित्सा फार्मासिस्ट के रूप में परिवर्तित करने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने सहकारी समितियों के कामकाज में शिक्षित युवाओं विशेष रूप से परामर्श सहयोग और प्रारंभिक स्थिरता अनुदान प्रदान करने के लिए राज्य में युवा सहकार कोष योजना शुरू करने को अपनी स्वीकृति प्रदान की। इस योजना के तहत युवा सहकार कोष के अन्तर्गत पात्र किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) को प्रशिक्षण और सामुदायिक मोबलाईजेशन के लिए अधिकतम 25 हजार रुपये, एफपीओ प्रबंधन लागत पहले दो वर्ष में 2 लाख रुपये और दोगुनी इक्विटी अनुदान के बराबर सीड मनी अधिकतम 15 लाख रुपये तक है।

मंत्रिमंडल ने हमीरपुर जिला के सुजानपुर में जल शक्ति मंडल खोलने और इसके सुचारू संचालन के लिए आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को भी अपनी स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमंडल ने मंडी जिले के सुंदरनगर क्षेत्र के कांगू में नया जल शक्ति उप मंडल, जल शक्ति उप मंडल सुंदरनगर के अन्तर्गत चुरड़ में जल शक्ति अनुभाग और जल शक्ति उप मंडल निहरी के तहत चौकी में एक नया जल शक्ति अनुभाग खोलने और आवश्यक पद सृजित कर भरने का निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने जिला शिमला के रोहडू विधानसभा क्षेत्र के जल शक्ति मण्डल क्वार के तहत डोडरा में नया जल शक्ति अनुभाग खोलने का निर्णय लिया।

बैठक में जिला सोलन के जल शक्ति मण्डल अर्की के तहत कुनिहार में नया जल शक्ति उप-मण्डल खोलने तथा विभिन्न श्रेणियों के चार पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया।

बैठक में जल शक्ति मण्डल बिलासपुर के तहत कुठेड़ा में जल शक्ति उप-मण्डल खोलने सहित आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने जिला सिरमौर के जल शक्ति उप-मण्डल सैंज के तहत बलघार में नया जल शक्ति अनुभाग खोलने सहित आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया।

बैठक में जिला सिरमौर के जल शक्ति उप-मण्डल हरिपुरधार के तहत गत्ताधार में नया जल शक्ति अनुभाग खोलने सहित आवश्यक पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया गया।

बैठक में जिला कांगड़ा के जयसिंहपुर विधानसभा क्षेत्र के जयसिंहपुर में जल शक्ति मण्डल खोलने को स्वीकृति प्रदान की। बैठक में जिला कांगड़ा के जल शक्ति मण्डल पालमपुर के तहत बनूरी में जल शक्ति उप-मण्डल खोलने का निर्णय भी लिया गया।

मंत्रिमण्डल ने जिला मण्डी के आयुर्वेदिक फार्मास्यूटीकल विज्ञान महाविद्यालय जोगिन्द्रनगर में अनुबन्ध आधार पर फार्मास्यूटिक्स तथा फार्माकॉगनोसी लैक्चरर के दो पदों को भरने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में जिला कुल्लू के बंजार विधानसभा क्षेत्र के गांव झामाच में नया आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने तथा विभिन्न श्रेणियों के तीन पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने जिला सिरमौर के शिलाई तहसील के शहीद कल्याण सिंह मेमोरियल एवं सांस्कृतिक मेला हल्ला को जिला स्तरीय मेले का दर्जा प्रदान करने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में जिला कुल्लू की तहसील भुंतर में हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह बजौरा में लोगों की सुविधा के लिए अतिरिक्त कमरों के निर्माण को मंजूरी दी।

मंत्रिमण्डल ने जिला शिमला के सुपर स्पेशलिटी खण्ड चमयाणा में लोक निर्माण विभाग के दो नए अनुभाग (सिविल एवं विद्युत) खोलने का निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने राज्य में सड़क परिवहन वाहनों के सभी पहलुओं को विनियमित करने के लिए परिवहन अपीलीय न्यायाधिकरण का गठन करने तथा विभिन्न श्रेणियों के 12 पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने जिला सिरमौर के नाहन विधानसभा क्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला हरिपुर खोल, पंजाहल व बर्मा पपरी में विज्ञान कक्षाएं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बिक्रमबाग में वाणिज्य कक्षाएं तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सैनवाला में वाणिज्य एवं गणित कक्षाएं आरम्भ करने तथा आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को मंजूरी प्रदान की।

बैठक में जिला कांगड़ा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला डुहक, द्रंग व धाटी में विज्ञान कक्षाएं आरम्भ करने तथा आवश्यक पदों को सृजित कर भरने को मंजूरी दी।

मंत्रिमण्डल ने जिला मण्डी के सराज विधानसभा क्षेत्र के छतरी में राजकीय महाविद्यालय खोलने तथा विभिन्न श्रेणियों के 18 पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की। इसके अतिरिक्त निर्माण गतिविधियों के लिए पांच करोड़ रुपये का प्रावधान भी किया।

बैठक में जिला मण्डी के ग्राम पंचायत झलैड़ के बिहानी में स्वास्थ्य उप-केन्द्र खोलने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमण्डल ने जिला ऊना के कुटलैहड़ विधानसभा क्षेत्र के पशु औषधालय धमान्दरी को पशु अस्पताल में स्तरोन्नत करने तथा तीन पदों को सृजित कर भरने का निर्णय लिया।

बैठक में जिला चम्बा के दूर-दराज क्षेत्र लडवा में लोगों की सुविधा के लिए स्वास्थ्य उप-केन्द्र खोलने का निर्णय लिया।

दुनिया तभी पवित्र और अच्छी हो सकती है,
जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे हो।

.....स्वामी विवेकानंद

सम्पादकीय

क्या जयराम भी मान की तर्ज पर भ्रष्टाचार के खिलाफ कारवाई करेंगे

पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार आने के बाद भगवंत मान ने सबसे पहले उस सुरक्षा स्थिति का नये सिरे से आकलन किया जिसके तहत कुछ राजनेताओं और अन्य लोगों को पुलिस सुरक्षा उपलब्ध करवाई गयी थी। इस आकलन में प्रशासन द्वारा दिये गये फीडबैक के बाद यह सुरक्षा हटा ली गयी और उन लोगों के नाम भी सार्वजनिक कर दिये गये जिनकी सुरक्षा हटायी गयी थी। अब यह सुरक्षा हटाये जाने के बाद पंजाब कांग्रेस के नेता सिद्धू मूसेवाला की कुछ लोगों ने सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी है। यह हत्या निंदनीय है विपक्ष इस हत्या के लिये मुख्यमंत्री और आप संयोजक अरविन्द केजरीवाल को जिम्मेदार मानते हुये उन पर भी गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज करने की मांग कर रहा है। इससे पता चलता है कि राजनीति अब नया मोड़ लेने वाली है। मेरे विचार में पंजाब सरकार से मांग यह की जानी चाहिये कि वह दोषियों को जल्द से जल्द पकड़े। यहां इस पर भी विचार किया जाना चाहिये कि संसद से लेकर विधानसभाओं तक कितने अपराधिक छवि के लोग माननीय बनकर पहुंच चुके हैं और इससे कोई भी राजनीतिक दल अछूता नहीं है। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि हर दल ऐसे ही लोगों को अपने यहां स्थान दे रहा है। यही लोग माननीय बनकर सुरक्षा घरों में घूमते हैं। जिसकी कीमत आम आदमी की सुरक्षा में कमी करके चुकायी जाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बड़ा दावा किया था कि वह संसद को अपराधियों से मुक्त करवायेंगे। लेकिन इस दावे के विपरीत भाजपा ने भी हर चुनाव में अपराधिक छवि के लोगों को अपना उम्मीदवार बनाया है क्यों? इसलिए इस हत्या के बाद अपराधिक छवि के लोगों के राजनीति में प्रवेश को लेकर एक खुली बहस आयोजित किया जाना आवश्यक है।

इस हत्या से पहले पंजाब सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्यवाही करते हुये जिस तरह से अपने स्वास्थ्य मंत्री को न केवल पद से ही हटाया बल्कि जेल भी पहुंचा दिया। भ्रष्टाचार की जानकारी केवल मुख्यमंत्री तक ही थी। मीडिया और विपक्ष को इसकी भनक तक नहीं थी। लेकिन भगवंत मान ने इस पर पर्दा डालने की बजाय मंत्री के खिलाफ कारवाई करके देश की सारी सरकारों के लिये एक चुनौती खड़ी कर दी है। आज भ्रष्टाचार जिस तरह कैंसर की शक्ल ले चुका हैं उसके परिदृश्य में मान का कदम अति सराहनीय है। आज तक केंद्र से लेकर राज्यों तक कोई भी सरकार ऐसा नहीं कर पायी है। इसलिये मान के इस कदम से आम आदमी में आप की जो विश्वसनीयता बड़ी है। उससे दूसरे राजनीतिक दलों का गणित गड़बड़ाना आवश्यक है। क्योंकि आप ने दिल्ली में कांग्रेस और भाजपा दोनों को लगातार दो बार हराया है। पंजाब में भी यह दोनों दल हारे हैं। इससे आज आप भाजपा और कांग्रेस के विकल्प की शक्ल लेने लग गयी है।

आप की जिन मुफ्ती योजनाओं पर अपरोक्ष में चर्चा उठाते हुये कुछ अधिकारियों ने प्रधानमंत्री को यहां तक कह दिया था कि यदि राज्यों को ऐसा करने से न रोका गया तो यहां भी श्रीलंका जैसे हालात हो सकते हैं। लेकिन इसी बैठक के बाद हिमाचल के मुख्यमंत्री ने चुनाव के परिदृश्य में कई मुफ्ती की घोषणाएं करके भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर संकट में डाल दिया। मुफ्ती की घोषणाएं केंद्र से लेकर राज्यों तक हर सरकार चुनावी लाभ के लिये कर रही है। इन्हीं मुफ्ती घोषणाओं का परिणाम महंगाई और बेरोजगारी है। इसीलिए मुफ्ती संस्कृति को बढ़ावा देने की बजाय उसकी निन्दा की जानी चाहिये। आप के नेतृत्व से जब यह प्रश्न पूछा गया था कि मुफ्ती के लिये संसाधन कहां से आयेंगे तो जवाब आया था कि यदि भ्रष्टाचार पर कुछ नियंत्रण कर लिया जाये तो संसाधन स्वत: बन जायेंगे। मान ने भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ा कदम उठाकर 'आप' का संदेश स्पष्ट कर दिया है। आज इसकी तुलना जयराम के प्रशासन से की जाने लगी है। जय राम के कई मंत्री और दूसरे लोग पत्र बम्बों के माध्यम से भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे हैं। स्वास्थ्य निदेशक गिरफ्तार हुये। स्वास्थ्य मंत्री से विभाग ले लिया गया। आज भी एक डॉक्टर एम सी जैन ने प्रदेश के ड्रग कंट्रोलर के खिलाफ गंभीर आरोप लगाते हुये प्रधानमंत्री तक पत्र लिखा है। डॉक्टर जैन जांच की मांग कर रहा है यहां तक कहा है कि यदि जांच में आरोप प्रमाणित नहीं होते हैं तो वह कोई भी सजा भुगतने को तैयार है। यह शिकायत कोई गुमनाम नहीं है। लेकिन जयराम सरकार इस जांच के लिए तैयार नहीं हो पा रही है। बल्कि शिकायतकर्ता और उसकी शिकायत को जनता के सामने रखने वाले समाचार पत्र को भी धमकियां दी जा रही है। भ्रष्टाचार के ऐसे दर्जनों मामले प्रदेश सरकार के संज्ञान में लाये जा चुके हैं। जिन पर कोई कारवाई नही हो पायी है। इसलिए आज जनता को यह स्वयं फैसला करना होगा कि वह भ्रष्टाचार को कैसे आंकती है। क्या मान की तर्ज पर जयराम से भी भ्रष्टाचार के खिलाफ कारवाई की मांग करेगी जनता। क्योंकि जयराम का तो शीर्ष प्रशासन ही गंभीर आरोपों के घेरे में है।

महिला सशक्तिकरण का ऐतिहासिक उदाहरण है भोपाल का ताज-उल-मस्जिद

गौतम चौधरी

दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद 300 से अधिक वर्षों तक भारत में सबसे बड़ी मस्जिद बनी रही जब तक कि भोपाल (मध्य प्रदेश) का 'ताज-उल-मस्जिद' बन कर तैयार नहीं हो गया। 1970 के दशक की शुरुआत में इस मस्जिद ने भारत ही नहीं एशिया का सबसे बड़े मस्जिद होने का दावा पेश किया। यह मस्जिद आकार व प्रकार में ही ऐसा नहीं है अपितु इसने कुछ आदर्श भी कायम किए हैं। मसलन ताज-उल-मस्जिद ने खुद को महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया है। यही नहीं यह मस्जिद सामाजिक सौहार्द, समरसता और सहिष्णुता का प्रतीक बन कर उभरा है। अपनी स्थापना के बाद से, मस्जिद सहिष्णुता, परोपकार और दया के मार्ग पर अग्रसर है। साथ ही, कोविड-19 महामारी के दौरान मस्जिद को टीकाकरण केंद्र के रूप में इस्तेमाल किया गया है और मस्जिद प्रबंधन ने इसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

आज मस्जिद अतीत की महिलाओं के सशक्तिकरण की याद दिलाती है। इस भव्य संरचना का निर्माण एक महिला नवाब, शाहजहाँ बेगम द्वारा शुरू किया गया था, जो दो अवधियों के लिए मध्य भारत में भोपाल की इस्लामी रियासत की शासक रही। 1844-60 (जब वह नाबालिग थी, उसकी मां 'सिकंदर' भोपाल की बेगम रीजेंट के रूप में कार्य किया) और दूसरा 1868-1901 के दौरान। 1901 में उनकी मृत्यु के बाद, मस्जिद का निर्माण उनकी बेटी सुल्तान जहान बेगम द्वारा किया जाता रहा, जो 1901 और 1926 के बीच अपने जीवनकाल (12 मई, 1930) के अंत तक भोपाल की शासक बेगम थी।

आपको बता दें कि इस मस्जिद की एक दिलचस्प खासियत है। दरअसल, इस मस्जिद में महिलाओं का अलग से प्रार्थना स्थल विकसित किया गया है। इस स्थान को 'जेनाना' (महिला गैलरी) के नाम से जाना जाता है। मस्जिद में एक अलग महिला दीर्घा का निर्माण, इस मस्जिद की असाधारण विशेषताओं में से एक हे। क्योंकि उस अवधि में महिलाएं घर से प्रार्थना करती थीं। हालांकि इस्लाम महिलाओं को बराबर का अधिकार देता है लेकिन अधिकांश महिलाएं आज भी अमूमन अपने घरों में ही नमाज पढ़ती हैं। एक महिला नवाब द्वारा महिलाओं के लिए एक अलग स्थान के साथ निर्मित एक मस्जिद तत्कालीन भोपाल में महिला सशक्तिकरण प्रतीक नहीं तो और क्या है?

ताज-उल-मस्जिद में, सबसे ऊपरी मंजिल का उपयोग नमाज अदा करने के लिए किया जाता है, जबकि भूतल पर दुकानें विशेष रूप से डॉक्टर के क्लिनिक, पाथ लैब, दवा की दुकानें आदि हैं, क्योंकि मस्जिद भोपाल के सरकारी मेडिकल कॉलेज के बगल में स्थित है। आज, मस्जिद परिसर में अधिकांश दुकानें गैर-मुसलमानों के पास किराए पर या स्वामित्व में हैं। सांप्रदायिक सद्भाव का सबसे अच्छा पहलू शाम को यानी मगरिब के अजान के दौरान सामने आता है, जब मुस्लिम दुकान मालिक दीया, अगरबत्ती के साथ दुकानों को रोशन करते हैं और साथ ही आरती-पूजा भी होती है। ऐसा मंजर शायद भारत में ही देखने को मिले।

दुनिया में इस प्रकार की मस्जिद संभवत: बहुत कम होगी, जहां महिलाओं के लिए मुकम्मल व्यवस्था हो। आप सोच सकते हैं जब हिन्दू परिवार की लड़कियां भी अपने घरों से नहीं निकलती होगी तब मुसलमानों की बेटियां मस्जिद में जा कर नमाज पढ़ती थी। वह भी उस मस्जिद में जिसे एक मुस्लिम महिला शासक ने बनवाया। दिल्ली सल्तनत की शासक रजिया सुल्तान, सन् 1857 के गदर की प्रमुख योद्धा, बेगम हजरत महल ऐसे कई नाम हैं, जिन्होंने भारतीय बेटियों का मान बढ़ाया है। विभिन्न क्षेत्रों में आज भी हमारी बहन बेटियां अपना धाक जमाए हुए हैं। यह भोपाल की उस महिला शासकों जैसी प्रभावशाली सोच का परिणाम है, जिन्होंने भारत में महिला सशक्तिकरण की नीब रखी।

भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में एक नाम और जुड़ता है, वह है फातिमा शेख का फातिमा शेख ने लड़कियों, खासकर दलित और मुस्लिम समुदाय की लड़कियों को शिक्षित करने में सन् 1848 के दौर में अहम योगदान दिया था। फातिमा शेख ने दलित महिलाओं को शिक्षित करने का प्रयास करने वाली सावित्री बाई फुले और महात्मा ज्योतिबा फुले के साथ काम किया। दरअसल, सावित्री बाई फुले ने जब दलितों के उत्थान के लिए लड़कियों को शिक्षित करने का काम शुरू किया, उन्हें घर से निकाल दिया गया। उस वक्त फुले दंपती को फातिमा शेख के बड़े भाई मियां उस्मान शेख ने अपने घर में जगह दी थी। सावित्री फुले ने जब स्कूल खोला उस वक्त बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं मिल रहे थे, लेकिन फातिमा शेख ने उनकी मदद की और स्कूल में लड़कियों को पढ़ाया। उनके प्रयासों से ही जो मुस्लिम लड़कियां मदरसों में जाती थी, वो स्कूल जाने लगी। फातिमा शेख को दलित-मुस्लिम एकता का आधार भी माना जाता है।

मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना से प्रदेश की लाखों महिलाओं का आर्थिक विकास एवं सामाजिक सुरक्षा हो रही सुनिश्चित

शिमला। परिवार के पालन पोषण में अपनी भूमिका का बखूबी निर्वहन करने वाली प्रदेश की कर्मठ महिलाएं अब यहां की आर्थिकी में योगदान देने के लिए आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रही हैं। उनके इन हौंसलों को उड़ान देने में मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना किसी वरदान से कम नहीं है। इस योजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को अतिरिक्त आर्थिक मदद प्रदान कर उनका आर्थिक एवं सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जा रहा है।

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लाखों महिलाओं को आजीविका एवं स्वरोजगार सम्बन्धी गतिविधियाँ शुरू करने व उद्यमिता बढ़ाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर द्वारा वर्ष 2022-23 के वार्षिक बजट अनुमान प्रस्तुत करते हुए मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना शुरू करने की घोषणा की गयी थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत बने महिला स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाना है। योजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों को आजीविका सम्बन्धी गतिविधियाँ शुरू करने व उद्यमिता बढ़ाने के लिए अतिरिक्त परिक्रमा राशि (रिवॉल्विंग फंड) प्रदान की जाएगी। ताकि उन्हें आर्थिक रूप से समर्थ बनाया जा सके।

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लाखों महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से उनका पंजीकरण प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना व प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में किया जायेगा। विशेष बात यह कि इन बीमा योजनाओं के वार्षिक प्रीमियम का भुगतान राज्य सरकार वहन करेगी। हि.प्र. राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत प्रशिक्षित सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों के मानदेय में बढोतरी कर उन्हें योजना को जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

ग्राम संगठनों से जुड़े लगभग 10 हजार स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय वर्ष 2022-23 में 25,000 रूपये प्रति समूह अतिरिक्त परिक्रमा राशि (रिवॉलव्वग फंड) प्रदान की जाएगी। इसके अतिरिक्त वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए ग्रामीण विकास विभाग के तहत बने स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना व प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत शामिल किया जा रहा है।

राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षित एवं कार्यरत सामुदायिक संसाधन व्यक्तियोंय कृषि सखी, पशु सखी, कृषि उद्योग सखी, वित्त सखी, बैंक सखी आदि का मानदेय 350 रूपये प्रतिदिन से बढ़ा कर रूपये 500 प्रतिदिन किया जायेगा। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत श्रेणी.1 जिलों क्रमश: शिमला, मंडी, काँगड़ा तथा ऊना की तरह श्रेणी.2 जिलों (अन्य 8 जिलों) में भी अतिरिक्त ब्याज उपदान प्रदान किया जायेगा ताकि इन जिलों में भी स्वयं सहायता समूहों को 4 प्रतिशत की दर से बैंकों से ऋण उपलब्ध करवाया जा सके। भारत सरकार द्वारा श्रेणी.2 जिलों में ब्याज उपदान देने के बाद जो भी अतिरिक्त ब्याज उपदान देय होगा, उसे प्रदेश सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना अनुसार स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी सभी पात्र महिलाओं को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना व प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत शामिल करने के लिए एक राज्य स्तरीय जीवन है अनमोल अभियान प्रदेश में चलाया गया। 15 अप्रैल, 2022 को हिमाचल दिवस के अवसर पर प्रारम्भ और 25 दिन तक चले इस अभियान के दौरान स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लगभग 2.20 लाख महिलाओं को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं 1.85 लाख महिलाओं को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में पंजीकृत करवाया गया है।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना व प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को 2 लाख रूपये का दुर्घटना बीमा एवं 2 लाख रूपये का जीवन बीमा का लाभ प्राप्त होगा। इन योजनाओं के अंतर्गत पंजीकरण के उपरांत प्रीमियम भुगतान का व्यय प्रदेश सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री वीरेंद्र कंवर कहते हैं कि मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत आसानी से और कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध होने से स्वयं सहायता समूहों को स्वरोजगार सम्बन्धी गतिविधियाँ शुरू करने व उद्यमिता बढ़ाने में मदद मिलेगी, वहीं ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों के विकास से गांवों की आर्थिकी मजबूत करने में भी यह योजना कारगर सिद्ध होगी।

सेवा, सुशासन और गरीबों के कल्याण के 8 वर्ष

– जगत प्रकाश नड्डा –
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
भारतीय जनता पार्टी

आज केंद्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के गतिशील एवं निर्णायक नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार अपने सफल 8 वर्ष पूरे कर रही है। पिछले 8 वर्ष भारत के लिए एक मानक स्थापित करने वाले वर्ष रहे हैं जिसके दौरान राष्ट्र ने कई बंधनों को तोड़ा है और जातिवाद, वंशवाद, भ्रष्टाचार एवं तुष्टिकरण की राजनीति से आगे बढ़ते हुए विकास, उन्नति, एकता और राष्ट्रवाद की राजनीति को अपनाया है।

यह उल्लेखनीय यात्रा हमारे समाज के हाशिए के वर्गों–गरीबों से लेकर पिछड़े वर्गों, दलितों, अल्पसंख्यकों एवं आदिवासियों तथा उत्पीड़ित वर्गों से लेकर महिलाओं एवं युवाओं तक –को सशक्त बनाकर लोकतंत्र को सही अर्थों में मजबूत करने की रही है। यह भारतीय मानस को बदलने की यात्रा भी रही है। 'इस देश में कुछ भी संभव नहीं है' से लेकर 'सब कुछ संभव है अगर सरकार और लोगों की इच्छा एवं प्रतिबद्धता हो'।

यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन के प्रति 135 करोड़ भारतीयों की प्रतिबद्धता ही है जो आज धरातल पर झलक रही है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि अगर किसी नेता के पास कोई नीति एवं कार्यक्रम, संकल्प एवं समर्पण हो, तो हर चुनौती से निपटा जा सकता है और हर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश सिर्फ बदला ही नहीं है, बल्कि उल्लेखनीय उन्नति और तेजी से विकास का एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। आज जब देश 'आजादी का अमृत काल' मना रहा है, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश की चुनौतियों एवं समस्याओं से निपटने और उनका हल निकालने के लिए दृढ़ संकल्प और लचीलापन दिखाया है।

आज बदलते भारत के आठ वर्षों की झलक हर भारतीय की आंखों में दिखाई देती है। पिछले आठ वर्षों में हमारी गरीबी दर 22 प्रतिशत से घटकर 10 प्रतिशत रह गई है, जबकि अत्यधिक गरीबी एक प्रतिशत से नीचे गिर गई है और 0.8 प्रतिशत पर स्थिर बनी हुई है। पिछले आठ वर्षों में जहां हमारी प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो गई है, वहीं हमारे विदेशी भंडार में भी दो गुना वृद्धि हुई है।

आजादी के बाद से पिछले 70 वर्षों में जहां सिर्फ 6.37 लाख प्राथमिक विद्यालयों का निर्माण किया गया था, वहीं नरेन्द्र मोदी सरकार के कार्यकाल में अब तक 6.53 लाख स्कूल बनाए गए हैं। पिछले आठ वर्षों में हमारी साक्षरता दर में छह प्रतिशत का सुधार हुआ है, जोकि एक अनुकरणीय उपलब्धि है।

नरेन्द्र मोदी सरकार के कार्यकाल में 15 नए एम्स को मंजूरी दी गई है, जिनमें से 10 में कामकाज शुरू हो गए हैं। अन्य पांच में निर्माण कार्य अपने अंतिम चरण में है। इसी तरह, डॉक्टरों की संख्या में 12 लाख से अधिक का उछाल आया है। पिछले 8 वर्षों में भारत ने दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क बनाया है, वहीं पिछले पांच वर्षों में हमारी सौर एवं पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता दोगुनी हो गयी है।

भारत ने साल दर साल खाद्यान्न उत्पादन में रिकॉर्ड तोड़े हैं। 2012–13 की अवधि में हमारा खाद्यान्न उत्पादन 255 मिलियन टन था जोकि 2021–22 में बढ़कर 316.06 मिलियन टन हो गया। यह हमारे अब तक के इतिहास में सबसे अधिक उत्पादन है। कोविड महामारी के कारण वैश्विक आर्थिक मंदी के बावजूद, भारत पिछले वित्तीय वर्ष में निर्यात के क्षेत्र में 418 अरब डॉलर का रिकॉर्ड बनाने में कामयाब रहा।

नरेन्द्र मोदी सरकार के कार्यकाल में कई नए मानक स्थापित किए गए हैं और देश की सेवा, सुशासन एवं गरीबों के कल्याण में कई मील के पत्थर पार किए गए हैं। भारत ने कोरोना महामारी के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सबसे आगे बढ़कर इस लड़ाई का नेतृत्व किया। उन्होंने भारत को सिर्फ एक ही नहीं, बल्कि दो 'मेड इन इंडिया' टीके दिए। उन्होंने पिछले दो वर्षों में 3.40 लाख करोड़ रुपये के खर्च से 80 करोड़ से अधिक भारतवासियों को मुफ्त राशन प्रदान करने के लिए सरकारी खजाने खोल दिए। भारत ने जहां दुनिया का सबसे बड़ा मुफ्त टीकाकरण अभियान चलाया, वहीं इसका खाद्य वितरण कार्यक्रम भी दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य वितरण कार्यक्रम है। पूरी दुनिया ने भारत की इन दो अहम उपलब्धियों की सराहना की है।

नरेन्द्र मोदी सरकार के पिछले आठ वर्षों के दौरान कई बातें पहली बार हुई हैं। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से आम आदमी को जहां मुफ्त चिकित्सा बीमा कवरेज मिला, वहीं किसानों एवं मजदूरों को मासिक पेंशन मिली। पहली बार किसानों को जहां खेती के लिए किसान सम्मान निधि का लाभ मिलना शुरू हुआ, वहीं हमारी सरकार ने ही जैविक खेती के लिए एक नीति बनाई।

इसके अलावा, कई अनूठी योजनाएं भी हैं–जन धन योजना, उज्ज्वला योजना, किसान सम्मान निधि, आयुष्मान भारत योजना, गरीब कल्याण योजना, स्वच्छ भारत योजना, आवास योजना, जल जीवन मिशन, डिजिटल इंडिया, ग्राम विकास योजना एवं जीएसटी। इन योजनाओं ने न सिर्फ नागरिकों को सशक्त बनाया, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया और भारत को लचीला एवं आत्मनिर्भर बनाया। कठिन वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद भारत की सुदृढ़ और मजबूत सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था के पीछे यही कारण है। आत्मनिर्भर भारत, वोकल फॉर लोकल, गति शक्ति योजना, पीएलआई (उत्पादन आधारित प्रोत्साहन) जैसी योजनाओं ने भारत को वैश्विक व्यवस्था के शीर्ष पर पहुंचा दिया है।

पिछली सरकारों में हमारी कुछ चिरस्थायी समस्याओं से निपटने की इच्छाशक्ति की कमी थी, और सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ दिया गया था। लेकिन समस्याओं से निपटने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नवीन एवं निर्णायक दृष्टिकोण ने सब कुछ बदल दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृढ़ संकल्प के कारण ही अनुच्छेद 370 को निरस्त करना, अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण, तीन तलाक की कठोर प्रथा को समाप्त करना, सीएए को पारित करना और सीमा पार आतंकी शिविरों पर सर्जिकल स्ट्राइक करना संभव हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अनूठी शैली की वजह से ही बेमानी हो चुके 1800 पुराने कानूनों की पहचान हुई और इनमें से अब तक 1450 कानूनों को खत्म कर दिया गया है। पिछली किसी भी सरकार ने इसके बारे में नहीं सोचा था। इस कदम से नागरिकों का जीवन आसान हो गया और सरकार की दक्षता में सुधार हुआ।

विदेश नीति एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हमने कई कीर्तिमान बनाए हैं और नए मील के पत्थर पार किए हैं। भारत की विदेश नीति को भारत के लाभ की दृष्टि से फिर से तैयार किया गया है। इराक, यमन, अफगानिस्तान से लेकर यूक्रेन तक के मामले में, भारत ने दुनिया को यह दिखाया है कि एक प्रभावी विदेशी संबंध कैसे नागरिकों का जीवन बचाने में मदद करते हैं। आतंकवाद, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल सोलर अलायंस, क्वाड की प्रभावशीलता और हमारे पड़ोसियों के साथ हमारे मजबूत संबंधों के मुद्दों पर भी भारत ने आगे बढ़कर नेतृत्व किया है। हमारी विदेश नीति हमेशा सटीक रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आठ वर्ष भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के काल भी रहे हैं। योग एवं आयुर्वेद ने जहां दुनिया का ध्यान खींचा है, वहीं भारत के खोए हुए सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतीकों ने अपना गौरव वापस पा लिया है। इनमें काशी विश्वनाथ धाम और केदारनाथ धाम जैसे हमारे पवित्र स्थलों का जीर्णोद्धार भी शामिल है। यह अभी शुरुआत है क्योंकि भारत अपने गौरवशाली इतिहास को पुन: हासिल करने की प्रतीक्षा कर रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने भी कई रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं और नई ऊंचाइयों को छू लिया है। आज भाजपा 18 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन है। 2014 में भाजपा एवं उसके सहयोगी दलों की सात राज्यों में सरकारें थीं और आज 18 राज्यों में हमारी सरकारें हैं। राज्यसभा में पहली बार भाजपा ने 100 सांसदों का आंकड़ा पार किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, असम, गोवा, मणिपुर और त्रिपुरा में चुनावी रिकॉर्ड तोड़ दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सफलता का राज यह है कि हमारी पार्टी ने 135 करोड़ भारतीयों का विश्वास और आशीर्वाद अर्जित किया है। आज देश भर के लोग जानते हैं कि केन्द्र में एक ऐसी सरकार है जो उनके कल्याण के लिए काम करती है और 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी भारत को बदलने और भारत को एक ऐसा देश बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जहां सभी एक हों और सुख एवं समृद्धि से लैस हों। एक बार फिर से भारत को एक खुशहाल एवं समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने और खुद को प्रतिबद्ध करने का संकल्प लेने का समय आ गया है।

ड्रोन–डिजिटल इंडिया की नयी उड़ान

– नील मेहता –
एस्टेरिया एयरोस्पेस
निदेशक एवं सह–संस्थापक

कुछ समय पहले तक ड्रोन को महंगे सैन्य उपकरण या छोटे मनोरंजक खिलौनों के रूप में देखा जाता था। लेकिन, पिछले कुछ वर्षों में स्थितियां में काफी बदलाव आया है, क्योंकि ड्रोन, जिसे आधिकारिक तौर पर सुदूर चालित हवाई प्रणाली (रिमोटली पाइलेटेड एरियल सिस्टम, आरपीएएस) के रूप में जाना जाता है, कई उद्योगों के अनुप्रयोगों के लिए एक व्यावहारिक समाधान के रूप में सामने आया है। ड्रोन के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव का मुख्य कारण है। ड्रोन की लागत प्रभावी तरीके से मांग के अनुसार उड़ान के जरिये डिजिटल डेटा देने की क्षमता।

हालांकि, ड्रोन का विकास, अपनाने का तरीका और उपयोग (अभी प्रारंभिक अवस्था में है। लेकिन, यह भी सच है कि ड्रोन नए तरीकों पर आधारित प्रभावी समाधान प्रदान कर रहे हैं, जो कागज़ और कलम से संचालित होने वाले पुराने तरीकों के स्थान पर परिचालन को डिजिटल युग में ले जा रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों में ड्रोन कई सरकारी और निजी प्रतिष्ठानों का एक अभिन्न अंग बन गए हैं (विशेष रूप से उद्योग के क्षेत्रों में, जो नयी तकनीक को अपनाने में हमेशा असफल रहते हैं, कारण चाहे जो भी रहे हों। ड्रोन कुशल और समयबद्ध तरीके से सुस्त, अस्वच्छ व खतरनाक काम कर रहे हैं और इस तरह से काम करने के पारंपरिक तरीकों के एक बेहतर विकल्प के रूप में सामने आये हैं।

ड्रोन के कुछ मौजूदा अनुप्रयोगों में निगरानी और सुरक्षा, महत्वपूर्ण परिसंपत्तियों का निरीक्षण और निगरानी, सर्वेक्षण एवं लॉजिस्टिक्स आदि शामिल हैं। ये अनुप्रयोग कई उद्योग क्षेत्रों से सम्बंधित हैं, जैसे रक्षा और आतंरिक सुरक्षा, कृषि, तेल और गैस, ऊर्जा व उपयोगिता, दूरसंचार, भू–स्थानिक सर्वेक्षण, खनन, निर्माण, परिवहन आदि। भारत में इन क्षेत्रों में ड्रोन तकनीक को अपनाने की प्रक्रिया प्रारंभिक अनुसंधान चरण से एक ऐसे चरण में पहुंच गयी है, जहां व्यापार जगत को यह अनुभव हुआ है कि इसकी क्षमता व संभावना का उचित उपयोग किया जा सकता है। अब व्यापार जगत इसे अपनाने के लिए तैयार है।

आज, भारत में ड्रोन का उपयोग (सटीकता से खेती के लिए फसल के स्वास्थ्य की निगरानी तथा सैकड़ों किलोमीटर लम्बी गैस पाइपलाइनों का निरीक्षण करने से लेकर सीमा पर सुरक्षा प्रदान करने एवं समय पर महत्वपूर्ण स्वास्थ्य आपूर्ति करने से जुड़े क्षेत्रों में किया जा रहा है। भारत सरकार स्वामित्व योजना के हिस्से के रूप में भूमि रिकॉर्ड को डिजिटल रूप देने, खदानों तथा राजमार्ग निर्माण में ड्रोन सर्वेक्षण के उपयोग को अनिवार्य करने और कृषि में बदलाव के लिए ड्रोन शक्ति व किसान ड्रोन पहल को बढ़ावा देने के क्रम में ड्रोन के व्यापक उपयोग के माध्यम से इस तकनीक का प्रारंभिक उपयोग शुरू कर चुकी है। उपयोग के विविध क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए, अनुमान है कि देश में ड्रोन और संबंधित समाधानों का बाजार अगले 3–4 वर्षों में 15,000 करोड़ से अधिक का हो जाएगा।

इस उभरते और रणनीतिक प्रौद्योगिकी क्षेत्र की क्षमता को स्वीकार करते हुए, सरकार ने इस दशक के अंत तक भारत को वैश्विक ड्रोन का हब बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसे ध्यान में रखते हुए, नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने ड्रोन नियम 2021 से शुरू करते हुए, देश में ड्रोन के निर्माण और परिचालन को उदार बनाने के लिए कई नीतियों और विनियमों को पेश किया है। ड्रोन प्रौद्योगिकी की क्षमता, आपूर्ति और प्रसार को बढ़ाने के लिए उद्योग जगत को इसी समर्थन की आवश्यकता थी। इस क्षेत्र के द्वारा देश के युवाओं के लिए नए जमाने के रोजगार के अवसर भी पैदा किए जा रहे हैं। ड्रोन उद्योग के विकसित होने से निकट भविष्य में प्रत्यक्ष रोजगार के 10,000 से अधिक अवसरों के पैदा होने की संभावना है, जिनमें ड्रोन पायलट, डेटा विश्लेषक, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर विकास व विनिर्माण, रख–रखाव एवं रिपेयर तकनीशियन शामिल हैं।

एक बड़ा संभावित बाजार, सॉफ्टवेयर और समाधान संबंधी विकास में एक मजबूत ताकत तथा ड्रोन–सेवा प्रदाता के लिए तकनीकी कार्यबल की उपलब्धता आदि कारणों से भारत के पास ड्रोन–आधारित समाधान के निर्माण एवं वितरण के लिए उपयुक्त प्लेटफार्म और संसाधन मौजूद हैं।

नई ड्रोन और ड्रोन–प्रतिरोधी प्रौद्योगिकियों के परीक्षण के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी में विशिष्ट और सैंडबॉक्स परीक्षण स्थल बनाना तथा दृष्टि से परे (बीवीएलओएस) परिचालन जैसे जटिल संचालन का परीक्षण से जुड़े अवसर, इस विकास को गति दे सकते हैं एवं वैश्विक कंपनियों को आकर्षित कर सकते हैं।

भारत को कल–पुर्जों के निर्माण इकोसिस्टम (बैटरी, इलेक्ट्रिक मोटर, इलेक्ट्रो– ऑप्टिक्स और सेंसर) को भी आकर्षित करना चाहिए, जिससे ड्रोन उत्पादों के निर्माण में और इसे बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था बनाने में मदद मिलेगी। इस प्रकार यह क्षेत्र विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होगा। ड्रोन, मुख्य रूप से मोबाइल फोन और बिजली चालित वाहनों का मिश्रण होता है, इसलिए इन क्षेत्रों में कल–पुर्जों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि ड्रोन निर्माण को भी जरूरी बढ़ावा मिल सके।

भारत में ड्रोन क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल है। अगले कुछ वर्षों में ड्रोन को कितने बड़े पैमाने पर अपनाया जाता है, यह महत्वपूर्ण है। उद्योग जगत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ड्रोन अंतिम उपयोगकर्ता के लिए उपयोगी हो तथा एक जिम्मेदार व सुरक्षित तरीके से ड्रोन के इस्तेमाल को बढ़ावा मिले।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी):शहरी भारत में बदलता जीवन

–डॉ. सेजल पटेल–
प्रोफेसर एवं चेयर, हाउसिंग फैकल्टी ऑफ प्लानिंग, हेड, इंटरनेशनल ऑफिस I, CEPT यूनिवर्सिटी, I K.L कैंपस, अहमदाबाद

प्रत्येक पात्र लाभार्थी को एक पक्का घर उपलब्ध कराने के माननीय प्रधान मंत्री के विजन को पूरा करने के उद्देश्य से, प्रधान मंत्री आवास योजना (शहरी) (पीएमएवाई-यू) वर्ष 2015 में शुरू की गई थी । पिछले सात वर्षों में, पीएमएवाई-यू में लगभग 8.31 लाख करोड़ रुपये के निवेश, जिसमें से 2.03 लाख करोड़ रुपये केंद्रीय सहायता है, के साथ लगभग 1.23 करोड़ घरों को स्वीकृति दी गई है । मई 2022 तक, 1 करोड़ से अधिक घरों का निर्माण शुरू हो चुका है और वे निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं(जिसमें से 60 लाख से अधिक मकान बनकर तैयार हो चुके हैं और लाभार्थियों को सौंप दिए गए हैं।

पीएमएवाई-यू निसंदेह दुनिया में सबसे महत्वाकांक्षी और सबसे बड़ा आवास कार्यक्रम है। यह अत्यधिक प्रासंगिक है और 'सबके लिए आवास' प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय विकास की प्राथमिकताओं और वैश्विक लक्ष्यों के अनुरूप है। कार्यकाल सुरक्षा की आवश्यकता को मानते हुए, मिशन ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, निम्न आय वर्ग और मध्यम आय वर्ग सहित सभी आय वर्गों में आवास की मांग को स्वीकार किया, और इसका उद्देश्य पानी के कनेक्शन, रसोई और शौचालय की सुविधा के साथ सभी मौसमों के अनुकूल, शालीन आवासीय इकाइयां प्रदान करके पर्याप्त भौतिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है। आवास में लैंगिक समावेश में तेजी लाते हुए, मिशन आवास इकाइयों में संयुक्त रूप से या एकमात्र मालिक के रूप में महिलाओं का मालिकाना हक अनिवार्य करता है। मिशन ने व्यापक रूप से सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रतिबद्धता को पूरा किया है: शून्य गरीबी का लक्ष्य 1, लैंगिक समानता का लक्ष्य 5, स्वच्छ पानी और स्वच्छता का लक्ष्य 6, संवहनीय शहरों और समुदायों का लक्ष्य 11 और जलवायु कारवाई का लक्ष्य 13।

पीएमएवाई-यू पांच मूलभूत तरीकों से कुकी कटर यूनिट्स और सिल्वर-बुलेट सॉल्यूशंस के साथ पूर्ववर्ती आवास योजनाओं से अलग है । सबसे पहले, पीएमएवाई-यू चार घटकों द्वारा आपूर्ति पक्ष या मांग पक्ष समर्थन के साथ, कैफेटेरिया दृष्टिकोण अपनाते हुए शहरी परिवारों के विभिन्न सेगमेंट्स की आवास 'मांग' को पूरा करता है। स्थानीय स्तर पर महत्वाकांक्षी मांग सर्वेक्षणों के माध्यम से अलग-अलग आवास की मांग को जाना, जिससे इच्छुक लाभार्थियों को उपयुक्त घटक का विकल्प चुनने की अनुमति मिली और इससे शहर आवास की मांग तैयार कर पाये, जिसके आधार पर प्रत्येक घटक के लिए राष्ट्रीय लक्ष्य तैयार किए गए। इस तरह के बॉटम-अप दृष्टिकोण के साथ, मिशन ने आवास और सम्मानजनक जीवन के लिए विभिन्न लक्षित समूहों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जरूरत के अनुसार उचित रूप से विभिन्न डिजाइन तत्वों को विकसित किया है। पीएमएवाई-यू के लोकाचार समावेशी हैं तथा लिंग, जाति, पंथ या धर्म पर ध्यान दिये बिना सभी को समान अवसर प्रदान करते हैं।

दूसरा, पीएमएवाई-यू के तहत विजन पहले के आवास कार्यक्रमों के 'स्लम-फ्री सिटी' के बजाय 'सबके लिए आवास' है, जिसका अर्थ है कि यह केवल एक सेगमेंट और सबमार्केट के बजाय सभी आय वर्गों के लिए आवास की जरूरत को पूरा करता है ।

तीसरा, यह शहरी स्थानीय निकायों को पीएमएवाई-यू को आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के अन्य मिशनों जैसे अमृत, एसबीएम, एनयूएलएम के साथ अभिशरण का अवसर प्रदान करता है और इस तरह आवास मूल्य श्रृंखला और सीढ़ी में एकीकृत आवास नीतिगत ढांचा प्रदान करता है ।

चौथा, मिशन सहकारी संघवाद की भावना को मजबूत करते हुए मांग आधारित दृष्टिकोण अपनाता है । यहाँ राष्ट्रीय और राज्य स्तर के संस्थान मौजूद हैं जो मिशन के कार्यान्वयन में सहायता प्रदान करते हैं ।

पांचवां, अनपेक्षित समूहों को लाभ कम करने के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वास्तविक और पात्र लाभार्थियों तक इच्छित लाभ पहुंचें, डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाया गया है। इसमें विभिन्न लिंकेज शामिल हैं जिन्हें लाभार्थियों के आधार सत्यापन के लिए यूआईडीएआई पोर्टल के साथ रखा गया है, पीएफएमएस के साथ डीबीटी मोड के माध्यम से निर्माण से जुड़ी सब्सिडी का हस्तांतरण और जीआईएस आधारित केंद्रीय एमआईएस आदि । एक व्यापक और मजबूत एमआईएस प्रणाली विकसित की गई है जो सभी हितधारकों को निर्बाध रूप से जानकारी का प्रबंधन करने और भौतिक और वित्तीय प्रगति से संबंधित रिकॉर्ड रखने में मदद करती है। मकानों के निर्माण की प्रगति की निगरानी के लिए एमआईएस पांच चरणों वाली जियो-टैगिंग सुविधाओं से युक्त है। सूचना के प्रसार के लिए एमआईएस को विभिन्न डैशबोर्ड और डीबीटी भारत पोर्टल के साथ भी एकीकृत किया गया है।

प्रत्यक्ष भौतिक और वित्तीय प्रगति के अलावा, मिशन ने अपने बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज के कारण अर्थव्यवस्था पर एक व्यापक प्रभाव डाला है, जो अर्थव्यवस्था के लगभग 130 क्षेत्रों को प्रभावित करता है। यह अनुमान लगाया गया है कि मिशन के तहत निर्माण गतिविधि में लगभग 413 मीट्रिक टन सीमेंट और 94 मीट्रिक टन स्टील की खपत होगी, जो अर्थव्यवस्था के लिए बहुत आवश्यक प्रोत्साहन होगा । ऐसा अनुमान है कि मिशन 246 लाख रोजगार सृजित करने में सक्षम रहा है ।

इसके अलावा, पीएमएवाई-यू प्रौद्योगिकी नवाचार अनुदान (टीआईजी) के माध्यम से नई निर्माण प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा दे रही है । इस उद्देश्य के लिए ग्लोबल हाउसिंग टेक्नोलॉजी चैलेंज-इंडिया और इंडियन हाउसिंग टेक्नोलॉजी मेला आयोजित किया गया था। माननीय प्रधान मंत्री के विजन के तहत किफायती आवास को हकीकत में बदलने के प्रयास ने लाइट हाउस परियोजनाओं की शुरुआत की । देश के छह स्थानों- चेन्नई, इंदौर, राजकोट, लखनऊ, रांची और अगरतला में 6,000 से अधिक फ्लैटों का निर्माण चल रहा है। निर्माण प्रक्रिया में उपयोग की जा रही नवीन तकनीकों को जीएचटीसी-इंडिया के तहत शॉर्टलिस्ट किया गया था और जो अब गरीबों के लिए किफायती, आरामदायक, समावेशी, ऊर्जा-कुशल और आपदा-रोधी घरों के निर्माण में मदद कर रही हैं । इन तकनीकों का उपयोग छात्रों, प्रोफेशनल्स, बिल्डर और विभिन्न हितधारकों को सिखाया जा रहा है, ताकि वे उन्हें भारतीय संदर्भ में दोहरा सकें । हाल ही में, एलएचपी चेन्नई का उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री द्वारा किया गया था। परियोजना को 12 महीने के रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया था।

कोविड-19 महामारी ने शहरों में प्रवासी कार्यबल को किफायती किराये के आवास प्रदान करने की आवश्यकता को रेखांकित किया, जिसके परिणामस्वरूप 2020 में अफोर्डेबल रेंटल हाउसिंग कॉम्प्लेक्स योजना की शुरुआत हुई। अब तक, एआरएचसी के तहत लगभग 80,000 आवास इकाइयों को मंजूरी दी गई है, जबकि 22,000 इकाइयों में निर्माण कार्य शुरू हो गया है ।

मिशन के माध्यम से लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान देने की दिशा में काम करने का प्रयास किया गया है । पिछले कुछ वर्षों में, सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों और विशेष रूप से पीएमएवाई-यू लाभार्थियों के सहयोग से 'सबके लिए आवास' सुनिश्चित करने के प्रयासों को एक नई गति मिली है।

मुद्रा ऋण:समानता पर आधारित समृद्धि का एक सेतु

–सौम्य कांति घोष–
भारतीय स्टेट बैंक के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार

अपने शुरुआती दिनों से ही, मोदी सरकार आजादी के बाद के छह दशकों के दौरान गुप्त रूप से बनाई गई बहिष्करण की संस्कृति को अनिवार्य रूप से बदलना चाहती थी। बहिष्करण की यह संस्कृति और कुछ नहीं बल्कि हाशिए व पिरामिड के सबसे निचले पायदान पर बैठे लोगों को छोड़कर आगे बढ़ने की संस्कृति थी। इस स्थिति ने नए नीति-निर्माताओं को हमारे विशाल देश के कोने-कोने में समानता पर आधारित उद्यमशीलता के विकास के लिए बेचैन कर दिया। इस संबंध में, दो योजनाओं यानी प्रधानमंत्री जन धन योजना और मुद्रा ऋण ने इस देश की उद्यमशीलता की भावना को एक नई आजादी के वादे के साथ यहां के वित्तीय समावेशन, जमा एवं उधार, दोनों, से जुड़े परिदृश्य को बदलकार रख दिया है।

पिछले सात वर्षों में, बैंकों (आरआरबी सहित)/एनबीएफसी/एमएफआई ने कुल मिलाकर लगभग 18.4 लाख करोड़ रुपये की राशि के 35.32 करोड़ मुद्रा ऋण वितरित किए हैं, जिसमें सबसे छोटे उधारकर्ताओं के लिए औसतन 52,000 रुपये का ऋण शामिल है। इनमें से लगभग दो-तिहाई ऋण महिला उद्यमियों के लिए स्वीकृत किए गए हैं। यह मानते हुए कि प्रत्येक इकाई में कम से कम दो व्यक्ति कार्यरत हैं, एक रूढ़िवादी आकलन के आधार पर, ये इकाइयां 10 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान कर रही हैं।

वित्तीय समझ के मामले में थोड़े कम जानकार, लेकिन व्यावसायिक कौशल और कुछ बड़ा करने के सपनों से भरपूर लोगों की विभिन्न जरूरतों से अवगत रहते हुए सरकार ने विशेष रूप से उद्यमियों की विभिन्न श्रेणियों- शिशु, तरुण और किशोर- के हितों के संरक्षण के लिए मुद्रा ऋण की तीन श्रेणियां बनाईं। इस संबंध में मार्गदर्शक सिद्धांत यह था कि बदलते समय के साथ एक शिशु ऋणी हमेशा के लिए शिशु की श्रेणी में नहीं रहेगा, बल्कि वह एक तरुण के रूप में विकसित होगा, एक तरुण समय के साथ किशोर बन जाएगा और इसी क्रम में वह आगे समानता और समृद्धि सुनिश्चित करता जाएगा!

लेकिन, सरकार को 2014 के बाद की परिस्थितियों में कई चुनौतियों से पार पाना पड़ा। कोई कारगर व्यवस्था मौजूद नहीं थी। इस प्रस्तावित विशाल आकार की योजना को सहारा देने के लिए कोई संरचना या बुनियादी ढांचा उपलब्ध नहीं था। सरकार ने आपसी विश्वास का माहौल बनाकर प्रचलित संस्कृति को अनुशासित किया। सरकार एक साफ-सुथरे मॉडल के जरिए इतने बड़े पैमाने पर उद्यमशीलता को बढ़ावा दे रही थी जिसे पहले कभी नही आजमाया गया था। विकास और आय सृजन के अवसर उपलब्ध थे, लेकिन हाशिए पर बैठे लोगों को इस बात का यकीन नहीं था कि उनकी उद्यमशीलता की भावना को बैंकिंग प्रणाली से उत्साहवर्धक समर्थन भी मिलेगा।

सरकार द्वारा गारंटी और भरोसे (सीजीएफएमयू) के निर्माण ने यह सुनिश्चित किया कि बैंक तथा अन्य वित्तीय मध्यस्थ ऋण स्वीकृति एवं वितरण के लिए आश्वस्त हो जायें। 10 लाख रुपये तक के ऋण पर अब केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित ट्रस्ट से गारंटी मिलती है। उधारदाताओं के पास बिना किसी अन्य संपार्श्विक प्रतिभूति के उधार देने की अतिरिक्त सुविधा है। जल्द ही यह एक सर्वव्यापी परिघटना बन गई जिसमें इस देश के आम नागरिकों ने बड़ी वित्तीय संस्थाओं के पोर्टल को अपने लिए खुला पाया!

सरकार ने इस प्रक्रिया को कारगर बनाने और इसकी निगरानी करने के लिए प्रौद्योगिकी का भी इस्तेमाल किया। इस योजना की व्यापक स्वीकृति को प्रोत्साहित करने और लोगों को इस योजना के विवरण एवं बारीकियों से परिचित कराने के लिए बैंकिंग संवाददाताओं का सहारा लिया गया।

मुद्रा योजना के माध्यम से लोगों के सफल सशक्तिकरण की कई आकर्षक कहानियां हैं। सफलता की कई ऐसी कहानियां उन महिला कर्जदारों की हैं, जिन्होंने अपने परिवारों को आजीविका सहायता प्रदान करने के मामले में खुद को अग्रणी साबित किया है और यहां तक कि उन्होंने अन्य परिवारों को भी रोजगार प्रदान किया है। उन्होंने खुद को अनौपचारिक साहूकारों के चिरस्थायी बंधन से मुक्त कर लिया है और बैंकों द्वारा प्रदान किए गए वित्तीय सहायता के सहारे आगे बढ़ी हैं। मुद्रा ऋण पाने वाले कुल लाभार्थियों में दो-तिहाई महिलाएं हैं। उनमें से कई सामाजिक रूप से वंचित समूहों से आती हैं और वे देश के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को बदल रही हैं।

सफलता की ये कहानियां इस बात की याद दिलाती हैं कि कोई भी सूक्ष्म व्यवसाय कठिनाइयों एवं नादानियों के जरिए, उथल-पुथल एवं चुनौतियों के जरिए ही बड़ा बन सकता है! कोई भी चुनौती उसके अदम्य साहस और जीवट को तोड़ नहीं सकती।

देश ने कोविड महामारी के दौरान उद्यमशील भारत की दृढ़ भावना को भी देखा। कुछ विद्वान लोगों ने कहा कि व्यवस्था पर काफी दबाव बनेगा, अटके हुए कर्ज कई गुना बढ़ जायेंगे। लेकिन, उन्हें विस्मित करते हुए यह व्यवस्था इतनी मजबूत थी कि बिना किसी खरोच के सुरक्षित तरीके से आगे बढ़ गई। सरकार ने व्यापारी वर्ग की इस निडर नई नस्ल को सहयोग देने का अपना संकल्प बनाए रखा। सरकार ने उधारकर्ताओं के बोझ को काफी हद तक कम करने के लिए 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान योजना भी शुरू की जोकि आज भी जारी है।

एक नया डिजिटल इंडिया उभरकर सामने आ रहा है, जो हमारी वित्तीय प्रणाली में क्रांति ला रहा है। आज, भारत में एक ऐसी सुव्यवस्थित प्रणाली है जो किसी व्यक्ति को अपने घर बैठे ही ऋण के लिए आवेदन करने हेतु बैंक के ऐप का उपयोग करने में मदद करती है। मुद्रा ऋण देने के लिए एनबीएफसी और माइक्रो फाइनेंस संस्थानों ने बैंकों/आरआरबी के साथ हाथ मिलाते हुए नए अवसर पैदा किए हैं। कॉरपोरेट जगत को नई आपूर्ति श्रृंखला प्राप्त हो रही। इस प्रक्रिया का गुणक प्रभाव यह है कि ऋण के रूप में दिया गया एक रुपया चक्रीय अर्थव्यवस्था में काफी कमाई कर रहा है। इसमें उधारकर्ताओं और उनके परिवारों के लिए ऐसी सामाजिक सुरक्षा अंतर्निहित हैं, जिनके बारे में पहले कभी नहीं सोचा गया था! इससे आगे बढ़ते हुए, कृषि और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) के क्षेत्र में विभिन्न सरकारी कल्याणकारी एवं प्रोत्साहन योजनाओं को मुद्रा योजनाओं के साथ बेहतर ढंग से एकीकृत किया जा सकता है। साथ ही, फिन-टेक और स्टार्ट-अप से संबंधित इकोसिस्टम का बेहतर उपयोग सीमा पार जाकर एक व्यापक एवं चहुमुखी विकास के परिप्रेक्ष्य को सामने लाने के लिए किया जा सकता है।

मुद्रा ऋण योजना सफलता की एक ऐसी कहानी है जो यह दिखलाती है कि कैसे एक सही राजनीतिक इरादा सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक शक्तियों के साथ मिलकर एक स्थायी एवं समानता आधारित बदलाव का गुणक प्रभाव पैदा सकता है। हालांकि हमारा यह मानना है कि यह एक ऐसे उद्यमी भारत के अमृत काल की सिर्फ शुरुआत भर है जिसे खुद पर काफी भरोसा है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) के तहत ऋण

	वित्तीय वर्ष								कुल
	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022	2023	
स्वीकृत पीएमएमवाईऋणों की संख्या (करोड़ में)	3.49	3.97	4.81	5.99	6.20	5.07	5.37	0.42	35.32
स्वीकृत राशि (लाख करोड़ रुपये में)	1.37	1.81	2.54	3.21	3.37	3.21	3.39	0.00	18.90
वितरित राशि (लाख करोड़ रुपये में)	1.33	1.75	2.46	3.11	3.29	3.11	3.31	0.00	18.37

स्रोत: एसबीआई रिसर्च, भारत सरकार की मुद्रा साइट (mudra.org.in)20/05/2022 को अपडेट किया गया

छात्रहित एवं समाज सेवा से जुड़े कार्यों में अखिल भारतीय परिषद की भूमिका सराहनीय:जय राम ठाकुर

शिमला/शैल। शिमला पीटरहॉफ में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद की बैठक के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर का नागरिक अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने कहा कि अखिल भारतीय परिषद सदैव ही छात्रों के हितों के संरक्षण, राष्ट्रहित और समाज के विकास के लिए तत्परता के साथ कार्य करती है। उन्होंने कहा कि विभिन्न आपदाओं के समय में विद्यार्थी परिषद द्वारा किए गए कार्य सराहनीय हैं। कोरोना के संकटकाल के दौरान विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने जरूरतमंद लोगों को हर सम्भव सहायता प्रदान कर समाज सेवा की मिसाल कायम की है।

उन्होंने रक्तदान और पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए अखिल भारतीय परिषद की सराहना करते हुए कहा कि इससे अन्य संस्थाओं और लोगों को भी प्रेरणा प्राप्त होती है। उन्होंने अपने छात्र जीवन के दौरान अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में किए गए कार्यों का स्मरण करते हुए विभिन्न अनुभव भी साझा किए।

जय राम ठाकुर ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सकारात्मक बदलाव आये हैं। छात्रों को भारतीय मूल्यों के अनुरूप शिक्षा प्राप्त हो इस दिशा में कई कदम उठाए गए हैं। नई शिक्षा नीति दक्षतापूर्वक कार्यान्वित की जा रही है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने राज्य के विद्यार्थियों को प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने की दिशा में अनेक कारगर कदम उठाए हैं। प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में किये गये नवोन्मेषी प्रयासों की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अनेक महत्त्वकांक्षी योजनाएं आरम्भ की है। प्रदेश में तकनीकी शिक्षा तथा उच्च शिक्षा क्षेत्र में भी व्यापक उन्नति हुई है। प्रदेश ने अपने शैक्षणिक परिदृश्य को परिवर्तित किया है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्टूडेंटस फॉर होलिस्टिक डवेलपमेंट ऑफ हयूमेनिटी (शोध) फाउंडेशन की पुस्तक हिमाचली स्वातंत्रय वीरों का परिचय का विमोचन भी किया।

इससे पूर्व, स्वागत समिति के अध्यक्ष नंद लाल शर्मा ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. छगनभाई पटेल और राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने भी इस अवसर पर संबोधित किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी डॉ. साधना ठाकुर, शहरी विकास मंत्री सुरेश भारद्वाज, उद्योग मंत्री बिक्रम सिंह, स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव सैजल, ऊर्जा मंत्री सुख राम, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री राजिन्द्र गर्ग, नगर निगम शिमला की महापौर सत्या कौंडल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत अध्यक्ष डॉ. सुनील ठाकुर, प्रांत महामंत्री विशाल वर्मा, स्वागत समिति के महामंत्री विकास राठौर, परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के दौरे की तैयारियों की समीक्षा की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने इस माह की 31 तारीख को होने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शिमला दौरे की तैयारियों की समीक्षा के लिए राज्य सरकार के वरिष्ठ

अधिकारियों के साथ बैठक की अध्यक्षता की।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए हर संभव व्यवस्था की जाए। उन्होंने पुलिस को वाहनों के सुचारू संचालन, बसों और अन्य वाहनों की पार्किंग की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

जय राम ठाकुर ने अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि आम जनता को इस मेगा आयोजन के कारण किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े।

शहरी विकास मंत्री सुरेश भारद्वाज, प्रदेश भाजपा प्रभारी अविनाश राय खन्ना, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सुरेश कश्यप, संगठन सचिव पवन राणा, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार त्रिलोक जमवाल, मुख्य सचिव राम सुभग सिंह, पुलिस महानिदेशक संजय कुंडू, प्रधान सचिव सामान्य प्रशासन भरत खेरा, उपायुक्त शिमला आदित्य नेगी तथा राज्य सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

गृह रक्षकों का दैनिक मानदेय 883 रुपये प्रतिदिन करने का निर्णय:जय राम ठाकुर

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार ने गृह रक्षकों का दैनिक मानदेय 675 रुपये से बढ़ाकर 883 रुपये प्रतिदिन करने का निर्णय लिया है। इससे प्रदेश के लगभग 5 हजार गृह रक्षक लाभान्वित होंगे।

जय राम ठाकुर ने कहा कि गृह रक्षक जवान प्रतिमाह 20,258 रुपये प्रतिमाह मानदेय प्राप्त कर रहे थे और इस बढ़ोतरी के उपरांत अब उन्हें 26,492 रुपये प्रतिमाह मानदेय मिलेगा। इस तरह उनके मानदेय में प्रतिमाह 6,234 रुपये की वृद्धि सुनिश्चित होगी। उन्होंने कहा कि इस निर्णय के उपरांत इनके मानदेय पर प्रदेश सरकार प्रतिमाह 3 करोड़ रुपये और प्रतिवर्ष 34 करोड़ रुपये व्यय करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार अपने सभी कर्मचारियों के लिए छठे वेतन आयोग की सिफारिशें पूर्व में ही लागू कर चुकी है।

इजरायल दूतावास के अधिकारियों ने किया नौणी विवि का दौरा

शिमला/शैल। इजरायली दूतावास के कृषि अटैचे यायर एशेल के नेतृत्व में इज़राइली विशेषज्ञ प्रो. राफेल अब्राहम स्टर्न और येशयाहू स्टर्न ने इजराइल के दूतावास के एक प्रतिनिधिमंडल ने डॉ. वाईएस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी की दो दिवसीय यात्रा की। इस दौरे में दूतावास प्रोजेक्ट ऑफिसर ब्रह्मदेव और एकीकृत मधुमक्खी पालन विकास केंद्र (आईबीडीसी), हरियाणा की टीम डॉ. बिल्लू यादव और डॉ. पूनम सैनी मौजूद रही।

भारत-इजरायल कृषि परियोजना (आईआईएपी) के तहत यह प्रतिनिधिमंडल का तीसरा दौरा था। बैठक का मुख्य उद्देश्य परागण सेवाओं के माध्यम से कृषक समुदाय के लाभ के लिए वाणिज्यिक भौंरा पालन के लिए विश्वविद्यालय और इजरायल के विशेषज्ञों के बीच सहयोग बढ़ाना था।

प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रोफेसर राजेश्वर सिंह चंदेल, डॉ. रविंदर शर्मा, निदेशक, अनुसंधान एवं नोडल अधिकारी, एचपीएचडीपी, डॉ.आरके ठाकुर, कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष और विभाग के वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श किया। टीम ने विश्वविद्यालय में विकसित की जा रही भौंरा पालन सुविधा का भी दौरा किया।

इस अवसर पर प्रो.चंदेल ने कहा कि हिमाचल में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों है, जो देसी मधुमक्खियों द्वारा पसंद की जाती हैं, विशेष रूप से भौंरा जो एक प्रभावी परागणकर्ता हैं। उन्होंने कहा कि भारत में भौंरों की 48 से अधिक प्रजातियां हैं और परागण सेवाओं के लिए उनका उपयोग करने के प्रयास चल रहे हैं।

प्रोफेसर चंदेल ने कहा कि विश्वविद्यालय ने इस क्षेत्र में अग्रणी काम किया है और अब समय आ गया है कि यह शोध प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ सार्थक सहयोग के साथ आगे बढ़े ताकि किसान की उपज और गुणवत्ता बढ़ाई जा सके। डॉ. आरके ठाकुर ने बताया कि विभाग ने 1998 में भौंरा

पालन शुरू किया था। उन्होंने कहा कि इजरायल के विशेषज्ञों की तकनीक और ज्ञान से नियंत्रित परिस्थितियों में रानियों के साल भर पालन, संभोग और हाइबरनेशन तकनीक जैसी बाधाओं को दूर करने और विभिन्न बीमारियों और कीटों की घटनाओं से निपटने में मदद मिलेगी।

यायर एशेल ने मधुमक्खियों और भौंरों पर किए गए शोध कार्य के लिए विश्वविद्यालय को बधाई दी और आईआईएपी के तहत भविष्य के सहयोग और परियोजना के तहत किए गए विभिन्न कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि वह विश्वविद्यालय और इजरायल के विशेषज्ञों के बीच भविष्य के सहयोग की आशा कर रहे हैं। डॉ. रविंदर शर्मा का विचार था कि स्थानीय प्रजातियों के प्रजनन और विभिन्न बाधाओं को हल करने के लिए इजरायल, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों और आईबीडीसी रामनगर के बीच सहयोग के साथ-साथ विश्वविद्यालय और इजराइल में वैज्ञानिकों के व्यावहारिक प्रशिक्षण की संभावना को तलाशना जाना चाहिए।

इज़राइली विशेषज्ञों, प्रो राफेल अब्राहम स्टर्न ने इजराइल में भौंरा पालन तकनीक जबकि येशायाहू स्टर्न ने इजराइल में मधुमक्खी पालन के गुणन और व्यवसायीकरण और उन्नति पर बात की। आईबीडीसी के नोडल अधिकारी और प्रभारी डॉ. बिल्लू यादव ने आईबीडीसी के बारे में बताया कि उनका केंद्र हरियाणा में वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन पर कार्य कर रहा है।

भारत-इजरायल के बीच एक रणनीतिक साझेदारी है और आईआईएपी के तहत भारतीय किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए इजरायल एग्रो तकनीक का प्रदर्शन करने के लिए इंडो-इज़राइल सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस नामक विभिन्न प्लेटफार्मों की स्थापना की है। आईआईएपी के तहत मधुमक्खी प्रबंधन के प्रदर्शन के लिए हरियाणा के रामनगर में मधुमक्खी पालन के लिए उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की गई है।

मुख्यमंत्री ने किया आपदा प्रबन्धन जागरूकता कार्यक्रम का शुभारम्भ

शिमला/शैल। प्राकृतिक और अन्य आपदाओं के जोखिम और भेद्यता को कम करने के लिए समयबद्ध तैयारी तथा समय पर क्षेत्र विशेष के लोगों को सतर्क करना अत्यन्त आवश्यक है। यह बात मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने अटल सदन कुल्लू में कुल्लू जिला प्रशासन द्वारा आयोजित सप्ताह भर चलने वाले आपदा प्रबन्धन कार्यक्रम जेयूएआरई (ज्वाइंट यूनाइटेड एक्शन फॉर रेजिलिएन्स इन इमर्जेसी) के शुभारम्भ के अवसर पर लोगों को सम्बोधित करते हुए कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में आपदा प्रबन्धन प्रणाली को मजबूत करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने जिला में राज्य के लिए एक प्रेरक और आदर्श कार्यक्रम आरम्भ करने के लिए जिला प्रशासन कुल्लू के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आम आदमी को आपदा के प्रति जागरूक करना तथा आपदा के समय बचाव और राहत के लिए प्रबन्धन को प्रशिक्षित करना है। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम अपने आप में अनूठी पहल है।

जय राम ठाकुर ने कहा कि जेयूएआरई कार्यक्रम सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है। यह कार्यक्रम ग्राम पंचायतों, शहरी स्थानीय निकायों, स्कूल के विद्यार्थियों को सामुदायिक जोखिम, मानचित्र तैयार करने और आपदा के समय पर नागरिक सुरक्षा के लिए स्वयसेवकों की पहचान सुनिश्चित करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कार्यक्रम के तहत 5 जून, 2022 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जिले के 206 स्कूलों के छात्र एक साथ आपदा प्रबन्धन पर आधारित नाटकों का मंचन कर लोगों को जागरूक करेंगे।

उन्होंने विभिन्न आयोजनों के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

स्थानीय स्कूल के विद्यार्थियों ने प्रा तिक आपदाओं के प्रभावों के शमन और लोगों को इसके बारे में जागरूक करने के लिए नाटक का मंचन भी किया। इस अवसर पर भाजपा के प्रदेश प्रभारी अविनाश राय खन्ना, सांसद एवं प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष सुरेश कश्यप, शिक्षा मंत्री गोविन्द सिंह ठाकुर, विधायक सुरेंद्र शौरी व किशोरी लाल, पूर्व सांसद महेश्वर सिंह, एपीएमसी के अध्यक्ष राम सिंह, उपायुक्त कुल्लू आशुतोष गर्ग, पुलिस अधीक्षक गुरदेव शर्मा और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

क्या 82 हजार करोड़ के सौदे में सरकार को कोई टैक्स नहीं मिलेगा?

- 2016 में प्रतिस्पर्धा आयोग अंबुजा को 1164 करोड़ तथा एसीसी को 1148 करोड का जुर्माना लगा चुका है
- जुर्माने का मामला सर्वोच्च न्यायालय में लंबित है
- जिन कारणों पर जुर्माना लगा है उनमें सरकार की भूमिका क्या रही है?

शिमला/शैल। हिमाचल में स्थित अंबुजा सीमेंट और एसीसी में स्विट्जरलैंड की कंपनी होल्सिम की हिस्सेदारी 82000 करोड में अदानी ने खरीद ली है। इस सौदे के बाद अपने निवेशकों को संबोधित करते हुये होल्सिम के सीईओ जॉन जेनिश ने यह कहा है कि यह लेन देन टैक्स फ्री है। इस सौदे से उन्हें 6.4 अरब स्विस फ्रैंक की शुद्ध आय होगी। अंबुजा और ए सी सी में होल्सिम समूह किसी भी नुकसान या कर के लिये जिम्मेदार नहीं होगा। जब होल्सिम समूह जिम्मेदार नही होगा तो क्या इस पर देय करों की जिम्मेदारी अदानी की होगी? अदानी की ओर से इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी है। अदानी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में जिस तरह के रिश्ते हैं उनके चलते इस सौदे पर सबकी निगाहें लगी हुई हैं। इसमें यह भी एक रोचक तथ्य है कि 2016 में प्रतिस्पर्धा आयोग ने जिन ग्यारह सीमेंट कंपनियों को 6300 करोड का जुर्माना लगाया गया था। उनमें हिमाचल की यह दो कंपनियां भी शामिल रही हैं। इनमें अंबुजा को 1164 और ए सी सी को 1148 करोड़ का जुर्माना लगा था। इस जुर्माने को अपीलीय प्राधिकरण में चुनौती दी गयी थी और अब यह मामला सर्वोच्च न्यायालय में लंबित है।

स्मरणीय है कि जब 2018 में वॉलमार्ट और फ्लिपकार्ट में सोलह सौ करोड़ डॉलर की डील हुई थी तब वॉलमार्ट ने 7439 करोड़ का टैक्स अदा किया था। टैक्स अधिकारियों ने तब कहा था कि इसने अभी और टैक्स देय होगा। लेकिन अब इस डील पर अदानी की ओर से कुछ नही कहा गया है। कर तंत्र से जुड़े अधिकारी भी अभी तक खामोश हैं। केवल होल्सिम समूह के सी ई ओ ने अपने निवेशकों से साफ कहा है कि यह टैक्स फ्री लेन देन है। अंबुजा और ए सी सी दोनों हिमाचल में स्थित हैं। यदि प्रतिस्पर्धा आयोग ने इन कंपनियों को इतना भारी जुर्माना लगाया है तो तय है कि आयोग की नजर में तय मानकों की अनुपालना में कोई आवहेलना की जा रही थी। हिमाचल में स्थित इन उद्योगों को लेकर हिमाचल सरकार की ओर से ऐसा कभी कुछ सामने नहीं आया है। इसलिए यह स्पष्ट होना भी आवश्यक हो जाता है कि इन कंपनियों में ऐसा क्या हो रहा था जिस पर इतना बड़ा जुर्माना लगा तथा प्रदेश सरकार इस बारे में अनभिज्ञ रही है। आज प्रधानमंत्री मोदी अपनी सरकार के आठ वर्ष पूरा होने पर शिमला आ रहे हैं। इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि प्रदेश सरकार उनके सामने इस मुद्दे को रखे और प्रदेश की जनता को सही स्थिति की जानकारी दें।

विपक्ष भी इस मुद्दे पर मौन बैठा हुआ है। जबकि प्रदेश और राष्ट्रहित में यह एक बड़ा मुद्दा है। जिसमें 82 हजार करोड के लेन-देन पर कोई टैक्स न मिलने की आशंका व्यक्त की जा रही है और सभी संबध पक्ष मौन धारण किये हुए हैं।

क्या प्रधानमंत्री या .....पृष्ठ 1 का शेष

पाये हैं। स्कूलों में बच्चों को दिये जाने वाले मिड डे मील के लिये फरवरी के बाद किस्त जारी नहीं हो सकी है। मनरेगा में भी नये साल में कोई बजट जारी नहीं हो पाया है। इस वस्तुस्थिति में प्रधानमंत्री का शिमला में लगातार बैठा रहना भीं सरकार को डूबने से नहीं बचा पायेगा यह माना जा रहा है।

कांग्रेस नेताओं के दावे के बावजूद पेपर लीक का कथित ऑडियो क्यों नहीं हुआ जारी

कांग्रेस की आक्रामकता पर उठने लगे सवाल

शिमला/शैल। प्रदेश कांग्रेस के संगठन में हुये फेरबदल के बाद यह उम्मीद लगाई जा रही थी कि अब कांग्रेस एकदम आक्रामक होकर जयराम सरकार और भाजपा को घेरने में लग जायेगी। लेकिन अभी तक नयी टीम पुलिस पेपर लीक मामले को हांकने से ज्यादा कुछ नया नहीं कर पायी है। नये के नाम पर पदाधिकारियों की सूची को ही लंबा किया जा रहा है। ऐसे नेताओं को भी पद दिये गये हैं जो शायद व्यवहारिक रूप से बहुत ज्यादा सक्रिय भी नहीं रह गये थे। यह सही है कि वरीयता और वरिष्ठता का सम्मान होना चाहिये। लेकिन जिस आकार की नयी टीम बना दी गयी है उससे यह आशंका बलवती हो गयी है कि कहीं नई टीम इन वरिष्ठों के भार तले ही न दब जाये। आज जयराम सरकार का सत्ता का अंतिम वर्ष चल रहा है। सरकार के इस कार्यकाल में कांग्रेस कोई आरोप पत्र तक सरकार के खिलाफ जारी नहीं कर पायी है। हालांकि इसके लिये एक कमेटी भी गठित कर दी गयी थी। इस पर यह सवाल आज तक खड़ा है कि क्या कांग्रेस की नजर में सरकार का सब कुछ ठीक रहा है या फिर अपने पर लगे आरोपों से बचने की कवायद में ऐसा किया गया। आज आम आदमी पार्टी की आमद लगातार कांग्रेस और भाजपा दोनों के लिये गंभीर चुनौती बनती जा रही है। इस परिपेक्ष में कांग्रेस को व्यवहारिक रूप से अपना पक्ष जनता में स्पष्ट करना होगा और उसके लिए आक्रामक होने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

राष्ट्रीय स्तर पर जिस तरह से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता खासकर वह लोग जो जी 23 ग्रुप में सक्रिय थे वह एक-एक करके पार्टी छोड़ते जा रहे हैं। जी 23 से जुड़े कई वरिष्ठ नेताओं को कांग्रेस ने राज्यसभा के टिकट नहीं दिये है। हिमाचल से ताल्लुक रखने वाले आनंद शर्मा भी इस सूची में शामिल रहे हैं। ऐसे में यह आशंका बराबर बनी हुई है कि जी-23 के लोग कभी भी कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं। हिमाचल में स्व. वीरभद्र सिंह के वक्त में कांग्रेस में आंतरिक गुटबाजी बराबर बनी रही है। इसी के कारण पार्टी में वीरभद्र ब्रिगेड के बनाये जाने के हालात पैदा हो गये थे। भाजपा ने कैसे स्व. वीरभद्र सिंह के खिलाफ बने मामलों को हर चुनाव में भुनाया है। यह आज कांग्रेस को हर समय याद रखने की आवश्यकता है। भाजपा चुनाव जीतने के लिये किस हद तक जा सकती है इसे देश का हर वरिष्ठ नेता जानता है। स्व. वीरभद्र के वक्त में जो मीडिया उनके आगे पीछे घूमता था आज वही मीडिया भाजपा और जयराम के गिर्द घूम रहा है। इस परिदृश्य में कांग्रेस को भाजपा को चुनाव में हराने के लिये कोई ठोस नीति बनाना आवश्यक होगा। क्योंकि भाजपा जिस आक्रामकता के साथ चुनाव में उतरती है इन आठ वर्षो में हुये चुनावों में लगातार सामने आता रहा है। हर चुनाव में भाजपा नए मुद्दे गढ़ती है। कभी पुराने मुद्दों पर चर्चा नहीं आने देती है। इसलिये भाजपा को उसी की रणनीति से घेरने की नीति पर कांग्रेस नहीं चलेगी उसके लिए चुनावी रास्ता आसान नहीं होगा।

यह सवाल इसलिये उठ रहे हैं कि प्रदेश कांग्रेस की ओर से अभी तक ऐसा कोई बड़ा मुद्दा नहीं उठाया गया है जिस पर सही में सरकार घिरती नजर आये। पुलिस भर्ती पेपर लीक मामले में कांग्रेस के कुछ नेताओं का यह दावा सामने आया था कि उनके पास इस मामले से जुड़ा एक ऑडियो उपलब्ध है जिसमें कुछ बड़े अधिकारियों का आपसी संवाद है। यह ऑडियो मीडिया को भी जारी करने का दावा किया गया था। लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। जबकि यह मामला आज सी.बी.आई.को सौंप दिया गया है। इससे कांग्रेस की विश्वसनीयता पर सवाल उठने की स्थिति बनती जा रही है। यह सही है कि जनता केंद्र से लेकर राज्यों तक की सरकार से तंग आ चुकी है और बदलाव चाहती है। इस समय आम आदमी पार्टी एक विकल्प के रूप में हर रोज मजबूत होती जा रही है। ऐसे में यदि कांग्रेस अभी से सजग होकर न चली तो जरूरी नहीं है कि उसे सत्ता मिल ही जाये। आम आदमी पार्टी को हल्के से लेना बड़ी गलती होगा। क्योंकि पंजाब में मुसेवाला के हत्यारों की धरपकड़ शुरू हो चुकी है। हिमाचल प्रभारी और दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन को ई.डी. ने उस समय गिरफ्तार किया है जब इसी मामले में सी.बी.आई. एक पखवाड़ा पहले ही कोर्ट में चार्जशीट दायर कर चुकी है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस गिरफ्तारी के पीछे राजनीतिक कारण हैं और वह हिमाचल के चुनाव हैं। इसलिये यदि कांग्रेस सरकार के खिलाफ आक्रामकता में चूकती है तो उसके लिये जीत आसान नहीं होगी।